महामह नंदीश्वर

(लघु पूजन विधान)

आशीर्वाद :

अनासक्त महायोगी

आचार्य श्री विद्यासागरजी महामुनिराज

रचयिता :

'अर्हं योग प्रणेता'

श्री 108 प्रणम्यसागरजी मुनिराज

अरहंते सुहभत्ती सम्मत्तं

कृति	-	महामह नन्दीश्वर लघु पूजन विधान
आशीर्वाद	-	संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज एवं आचार्य श्री 108 समयसागरजी महाराज
रचयिता	-	मुनि श्री प्रणम्यसागरजी महाराज
गुरुचरणानुरागी	-	श्री राजेन्द्रकुमार-लाडबाई जैन पारस, पंकज, नरेन्द्र जैन (मोहिवाल) परिवार सिंगोली (जिला-नीमच) म.प्र. गुप्त दान राशि : 21,000 रूपए
प्राप्ति स्थान	-	आ. प्रशममति माताजी ससंघ आर्हत विद्या समिति गोटेगाँव, नरसिंहपुर (म.प्र.) मो.: 9425837476 - नवीन जैन
संस्करण	-	(तृतीय मार्च 2026) 5100 प्रतियाँ
	-	(द्वितीय मार्च 2026) 3100 प्रतियाँ
	-	(प्रथम 2025) 2100 प्रतियाँ
मूल्य	-	प्रभुभक्ति
मुद्रक	-	जैन राजेश कानूगो डीसेन्ट ग्राफिक्स, इंदौर मो.: 98260-14047

नंदीश्वर पूजा का महत्व

आचार्यों ने कहा - 'सम्यक्त्वं जिनभक्तिंभण्यते', अर्थात जिनेन्द्र भगवान की भक्ति सम्यक्त्व है । सराग सम्यगदृष्टि जीवों के लिए पंच परमेष्ठी की आराधना रूप भक्ति होती है, जो व्यवहार रूप कही और वीतराग सम्यगदृष्टियों के लिए शुद्धात्मा की भावना रूप भक्ति होती है, जो निश्चय रूप होती है, जिसे निजभक्ति भी कहा है । ये दोनों भक्ति ही जिनभक्ति कही जाती हैं। जो जीव जिनभक्ति नहीं कर पाता वह निजभक्ति भी नहीं कर सकता, इसलिए जिनभक्ति के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

ऐसी भक्ति को वृहद रूप से सम्पादित करने के लिए यह अनादि अनिधन पर्व हमारे सामने आते हैं। अष्टानिक पर्व के आठ दिनों में नंदीश्वर द्वीप के अकृत्रिम 52 जिनालयों में स्थित 5616 जिनबिम्बों की वृहद आराधना एक विशाल पुण्य का स्रोत है । अष्टानिक का अर्थ है- **अष्ट** (आठ), **आह्निक** (दिवस) आठ दिनों का यह पर्व एक अनादिकालीन महापर्व के रूप में ग्रंथों में भी वर्णित है । इन पर्वों का प्रारंभ किसी चमत्कार से नहीं हुआ, बल्कि अनादिकाल से है। **प्रथमानुयोग में इसके अनेक उदाहरण ज्ञातव्य है।**

भगवान नेमिनाथ के जीव ने की पूर्व भव में अष्टान्हिक महापूजा- जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह क्षेत्र में सीतोदा नदी के उत्तर तट पर सुगंधिला नामक देश में एक सिंहपुर नाम का नगर है । उसमें अर्हद्दास नाम का राजा राज्य करता था । उसकी स्त्री का नाम जिनदत्ता था । दोनों पूर्व भव में संचित पुण्य कर्म के उदय से उत्पन्न हुए कामभोगों से संतुष्ट थे । एक दिन रानी जिनदत्ता ने श्री जिनेन्द्र भगवान की अष्टान्हिका संबंधी महापूजा करके आशा प्रकट की, कि मैं कुल तिलक भूत पुत्र को प्राप्त करूँ ।

अष्टान्हिका महापूजां विधाय नृपतिप्रिया ।
कुलस्य तिलकं पुत्रं लप्सीयाहमिति स्वयम् ।।

उत्तर पुराण 70/7

ऐसी आशा कर वह बड़ी प्रसन्नता से रात्रि में सुख से सोई। उसी रात्रि को अच्छे व्रत धारण करने वाली रानी ने सिंह, हाथी, सूर्य, चंद्रमा और लक्ष्मी का अभिषेक ये पाँच स्वप्न देखे। स्वप्न के बाद कोई पुण्यात्मा उसके गर्भ में अवतीर्ण हुआ। नौ माह बाद पुत्र जन्म हुआ। पिता शत्रुओं से अजेय था; उसका नाम अपराजित रखा। किसी दिन राजा ने सुना **'मनोहर'** उद्यान में **'विमल वाहन'** तीर्थंकर आए हैं। राजा ने प्रणाम, पूजा, प्रदक्षिणा की और उनका उपदेश सुना। अपराजित के लिए राज्य देकर 500 राजाओं के साथ तप धारण किया। अपराजित ने शुद्ध सम्यग्दृष्टि होकर अणुव्रत आदि श्रावक के व्रत लिए।

कुछ समय बाद विमल वाहन का मोक्ष सुनकर संकल्प किया कि 'विमल वाहन' भगवान के दर्शन के बिना भोजन नहीं करूँगा। 8 दिन उपवास हो गया। इंद्र की आज्ञा से यक्ष ने साक्षात्कार कराके दर्शन कराया।

किसी दिन अपराजित बसंत ऋतु की अष्टान्हिका के समय जिन प्रतिमा की स्तुति कर धर्मोपदेश कर रहा था। दो चारण ऋद्धिधारी मुनि आए और कहा हे भगवन्! मैंने आपको कहीं देखा है। मुनि ने उनके भवान्तर का संबंध बताया। राजा ने उन्हें हितैषी कहा और प्रीतिकर कुमार को राज्य दिया। **"अष्टान्हिक पूजा"** की। प्रायोपगमन संन्यास धारण किया। 16 वें स्वर्ग में अच्युतेन्द्र हुए। यही जीव आगे सुप्रतिष्ठित राजा हुए, फिर जयंत विमान में अहमिन्द्र और फिर नेमिनाथ तीर्थंकर हुए।

भगवान शांतिनाथ के जीव ने की पूर्व भव में अष्टान्हिक महापूजा- एक बार राजा मेघरथ सर्व पापों का विनाश करने वाली नंदीश्वर द्वीप पूजा कर उपवास किए हुए जैन धर्म का उपदेश दे रहे थे, तभी एक काँपता हुआ कबूतर और उसके पीछे-पीछे एक वृद्ध गिद्ध आया। गिद्ध ने राजा से कहा मैं भूख से पीड़ित हूँ यदि आप मुझे इस कबूतर को भक्षण के लिए नहीं देंगे, तो मुझे मृत ही समझिए, वह कबूतर अभय की प्राप्ति के लिए राजा मेघरथ की शरण में भय से बैठ गया।

अनुज दृढ़रथ ने गिद्ध के इस प्रकार कहने का कारण पूछा तब राजा मेघरथ

ने बताया कि ये पूर्व भव में शत्रु थे, जिस कारण गिद्ध का कबूतर के प्रति द्वेष भाव है, तब राजा मेघरथ ने बताया कि सद्गृहस्थ को पात्र को ही आहार देना चाहिए, यह गिद्ध सत्पात्र नहीं है। इस प्रकार राजा ने उस कबूतर के प्राणों की रक्षा की। यह सारा वृत्तांत सुन कबूतर व गिद्ध ने परस्पर शत्रुता त्याग कर अनशन व्रत धारणकर देव हुए। एक दिन दमवर मुनि आहारार्थ मेघरथ राजा के यहाँ पधारे, राजा ने नवधा भक्तिपूर्वक उन्हें आहार दिया, देवों ने वहाँ पंचाश्चर्य प्रकट किए। यही राजा मेघरथ तीर्थंकर शांतिनाथ हुए।

भगवान मुनिसुव्रत के काल में राजा दशरथ ने भी इस पर्व की आराधना की थी । **राजा हरिषेण** अयोध्या के सूर्यवंशी राजा थे । वह अपनी पत्नी गंधर्वसेना के साथ चारण मुनियों के दर्शन करते हैं। उनसे अपने पूर्व जन्म पूछते हैं। मुनिराज कहते हैं कि- पूर्व भव में कुबेर वैश्य की सुंदरी नामक पत्नी के तीन पुत्र थे। श्री वर्मा, जय कीर्ति, जयचंद्र। तीनों ने उस भव में नंदीश्वर व्रत का पालन किया। उसके फल से श्री वर्मा, इस भव में हरिषेण बना और शेष दो भाई पूर्व भव बताने वाले स्वयं चारण मुनि हैं। हरिषेण तप करके उसी भव से मोक्ष प्राप्त करते हैं।

इसी तरह बहुत सी घटनाएँ उत्तर पुराण आदि में वर्णित है। हरिषेण कथाकोष में भी बहुत सी कथाओं में नंदीश्वर व्रत पालन का वर्णन है। नंदीश्वर पर्व के दिनों में की जाने वाली पूजा अनादि अनिधन है, यह इस बात से जाना जाता है कि अनेक तीर्थंकरों के पूर्व भव की कथा भी इस नंदीश्वर महिमा से जुड़ी है।

प्रभावना अंग में प्रसिद्ध वज्रकुमार मुनि रानी उर्विला के द्वारा किए इस अष्टान्हिका पर्व में भक्ति-भाव से प्रसिद्धि को प्राप्त हुए। जिन रानी उर्विला के द्वारा ही उस समय धर्म की प्रभावना उसकी श्रद्धा के कारण हुई।

नंदीश्वर की पूजा के फल से जीव तीन भवों में निर्वाण सुख को प्राप्त होता है, ऐसा वर्णन अठाई रासा में आया है। यदि हम अल्पकाल में मोक्षसुख की प्राप्ति चाहते हैं, तो उसका साधन यही नंदीश्वर की पूजा है।

नंदीश्वर में विराजमान जिनबिम्बों की पूजा ही वास्तव में सिद्धचक्र पूजा है। नंदीश्वर पर्व के इन दिवस में वहाँ स्थित अकृत्रिम जिनबिम्बों की आराधना करना ही उचित प्रतीत होता है, किन्तु विशेष चमत्कारों से प्रभावित होकर व्यक्ति इसके महत्व को गौण कर देता है।

संप्रतिकाल में श्रावकों की व्यस्त दिनचर्या को ध्यान में रख महामह नंदीश्वर विधान को एक लघुरूप में किया गया है, जिसमें महामह विधान की आठ पूजाओं का समावेश मात्र है और 108 जिनबिम्बों की अर्घ्यावली है। चारों अनुयोगों का ज्ञान पूजा विधान में सुधीजन प्राप्त कर सकें इस भावना से अर्घों की रचना की है। **प्रतिदिन एक** पूजा करके भी आठ दिनों में यह अर्चना पूर्ण कर सकते हैं। अष्टानिका पर्व के आठ दिनों में जिनेन्द्र भगवान की निःस्वार्थ भक्ति से जीव अपने संसार का विच्छेद करता है। श्रावक वर्ग जिनेन्द्र प्रभु की मंगलमय आराधना कर न केवल सम्यग्दर्शन अपितु सम्यग्ज्ञान व चारित्र की विशुद्धि को प्राप्त करें।

मुनि प्रणम्यसागर

नवदेवता पूजन

(स्थापना)

जिनदेव सिद्धातम सभी, आचार्य पाठक साधुगण
जिनधर्म जिन आगम जिनालय, बिम्ब जिनवर प्राण तन।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण ।।

देव शास्त्र गुरु तीन हैं, नव देवों का रूप ।
पंच परम परमेष्ठी, पूजूं सत्य स्वरूप ।।

ओं ह्लीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूह ! अत्र अवतर ! अवतर संवौषट् ! आह्वाननम्।

ओं ह्लीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूह ! अत्र तिष्ठ ! तिष्ठ ! ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्लीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

अरिहंत आदिक पंच गुरुवर ज्ञान दर्शन निर्मलं
शुद्धात्म पथ का अनुगमन, नव देवता का दर्शनं ।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण ।।

निर्मलता के भाव से, निर्मल जल को लाय।
तव चरणों को पूजता, चित निर्मल हो जाय।।

ओं ह्लीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः जन्मजरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ना चंद्रमा की चाँदनी, ना नीर शीतल दायकं
तव दर्श पूजन वन्दनं, मन ताप हर सुख कारकं ।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण ।।

शीतलता के भाव से, चन्दन घिस कर लाय।
तव चरणों को पूजता, भव आताप नशाय॥

ओं ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखण्डित सौख्य रूपी, ज्ञान तव है शाश्वतं
मैं शुद्ध निर्मल अक्षतों को, चरण करता अर्पणं।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण॥
अक्षयपन के भाव से, अक्षत चुनकर लाय।
तव चरणों को पूजता, अक्षय पद मिल जाय॥

ओं ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् - निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुण अनन्त सुधारते, जिनकी महक आनन्दकं
फिर पुष्प की सौगन्ध का क्या काम, जो है नश्वरं।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण॥
ब्रह्मचर्य के भाव से, पुष्प सुगन्धित लाय।
तव चरणों को पूजता, काम भाव नश जाय॥

ओं ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वैद्य अनुपम बन गए, जिनको न भूख तृषापरं
जो दूर देहज रोग से, नैवेद्य अर्पित उन पदं।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण॥
निर्भोक्ता के भाव से, मनहर चरु को लाय।
तव चरणों को पूजता, क्षुधा रोग नाश जाय॥

ओं ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्य ज्योतिर्मय स्वरूपी, ज्ञान ही आतम धनं
उन चरण आगे दीप ज्योति, जगमगाए निशि दिवं ।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण ॥

केवलता के भाव से, तमहर दीपक लाय ।
तव चरणों को पूजता, ज्ञान रूप पा जाय ॥

ओं ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्यानाग्नि से कर्माष्ट नाशी भावकर्म सुदूरगं
उन चरण आगे धूप वारूँ, मोक्ष लक्ष्मी पूरकं ।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण ॥

निष्कर्मा के भाव से, धूप सुगन्धित लाय ।
तव चरणों को पूजता, कर्म देह जल जाय ॥

ओं ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

पा मोक्ष फल आनन्द पूरित स्वयं निज संवेदनं
उन चरण आगे जड़ फलों का, त्यागना भी व्यर्थकम् ।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण ॥

मुक्ति फल के भाव से, चुन-चुन कर फल लाय ।
तव चरणों को पूजता, भव भ्रमणा मिट जाय ॥

ओं ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चन्दनाक्षत फूल चरुवर, दीप धूपादिक फलं
सबको मिलाकर अर्घ लाया पद मिले बहुमूल्यकं ।
जो पंच परमेष्ठी प्रवर, नव देवता जग में शरण
उन देव आगम गुरुवरों की, शरण है तारण तरण ॥

पद अनर्घ्य के भाव से, द्रव्य मिलाकर लाय।
तव चरणों को पूजता, भाव पूर्णता आय ॥

ओं ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः समूह अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(केसरी छन्द)

देव हमारे सबसे प्यारे, गुण अनन्त को चित में धारे ।
दोष अठारह रहित सहायी, मन वच तन से वन्दों भाई ॥1॥
ये अरिहन्त परम परमेष्ठी, तन सह विचरें जग में श्रेष्ठी ।
तन बिन शुद्ध सिद्ध अविकारी, मन वच तन वन्दना हमारी ॥2॥
स्वयं करें अरू और करावें, पंचाचार सूरि कहलावें ।
उपाध्याय शिक्षक गण पाठी, आतम ज्ञानी साधू साथी ॥3॥
तीर्थंकर जिनवर की वाणी, गणधर कथित शास्त्र सुखदानी ।
जिन आगम यह ही कहलावे, मोक्षमार्ग की राह बतावे ॥4॥
दश धर्मों की महिमा न्यारी, सकल लोक जन को उपकारी ।
जिनवर कथित धर्म सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी ॥5॥
कृत्रिम चैत्यालय अघहारी, अकृत्रिम की महिमा न्यारी ।
चैत्य जिनेश्वर के प्रतिरूपी, वंदन का सुख आत्म स्वरूपी ॥6॥
देव शास्त्र गुरू नव देवों की, पूजा लगती बड़ी अनोखी ।
वीतराग शिव मग जो चाहे, श्रद्धा से मिलती सुख राहें ॥7॥

ओं ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु-नवदेवता-पञ्चपरमेष्ठिसमूहेभ्यो नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

दोहा : देव शास्त्र गुरू तीन में, तत्त्व सप्त का सार।
नवदेवों को पूजते, मिले मोक्ष का द्वार ॥

॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

नंदीश्वर भक्ति के पद्य

नन्दीश्वर-स्द्द्वीप, नन्दीश्वर-जलघि-परिवृते घृत-शोभे।
चन्द्रकर-निकर-सन्निभ-रुन्द्र-यशो वितत-दिङ्-महीमण्डलके ॥11॥

तत्रत्याञ्जद-दघिमुख-रतिकर-पुरु-नग-वराख्य-पर्वत-मुख्याः।
प्रतिदिश-मेष-मुपरि, त्रयो-दशेन्द्रार्चितानि जिनभवनानि ॥12॥

आषाढ-कार्तिकाख्ये, फाल्गुणमासे च शुक्लक्षेऽष्टम्याः।
आरभ्याष्ट-दिनेषु च, सौधर्म-प्रमुख-विबुघपतयो भक्तया ॥13॥

तेषु महामह-मुचितं प्रचुराक्षत-गन्ध-पुष्प-धूपै-र्दिव्यैः।
सर्वज्ञ-प्रतिमाना-मप्रतिमानां प्रकुर्वते सर्व-हितम् ॥14॥

अंचलिका

इच्छामि भंते ! णंदीसरभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, णंदीसर-दीवम्मि, चउदिस विदिसासु अंजण-दघिमुह-रदिकर-पुरुणगवरेसु जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासिय-वाणविंतर-जोइसिय-कप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेहिं गंघेहि, दिव्वेहि पुप्फेहि, दिव्वेहि घूव्वेहि, दिव्वेहि चुण्णेहि, दिव्वेहि वासेहि, दिव्वेहि ण्हाणेहि आसाढ-कत्तियफागुण-मासाणं अट्ठमिमाई काऊण जाव पुण्णिमंति णिच्चकालं अंचंति, पूजंति, वंदंति, णमंसंति, णंदीसर महाकल्लाणं करंति अहमवि, इह संतो तत्थसंताई णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

अथ महामह-नंदीश्वर-विधान-प्रारम्भ-क्रियायां सकल-कर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वंदना-समेतं नंदीश्वर-भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

समुच्चय पूजा

(दोहा)

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, वसुविध द्रव्य संभार ।
वसु दिन वासव पूजते, पूजें मुनि सागार ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(दोहा)

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, बावन जिनवर धाम ।
जलधारा जिनचरण में विधिमल का क्या काम ।।1।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, बावन जिनवर धाम ।
चन्दन अर्चित चरण में, चित शीतल आराम ।।2।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः संसार-ताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, बावन जिनवर धाम ।
धवल-धवल अक्षत चढ़े, मति हो धवल ललाम ।।3।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, बावन जिनवर धाम ।
दिव्य पुष्प अर्चा महा, सिद्ध मनोरथ काम ॥4॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, बावन जिनवर धाम ।
दिव्य-दिव्य नैवेद्य ले, क्षुधा नशे दुख धाम ॥5॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, बावन जिनवर धाम ।
मोह तिमिर का काम क्या, केवल रवि का नाम ॥6॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, बावन जिनवर धाम ।
धूम उड़े पहुँचें वहाँ, जहाँ सिद्ध सुखधाम ॥7॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, बावन जिनवर धाम ।
समकित बढ़ता फल मिले, फल शाश्वत बिन दाम ॥8॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर वसुद्वीप में, बावन जिनवर धाम ।
निज पद निश्चल निरापद, पद अनर्घ्य विश्राम ॥9॥

ओं ह्रीं श्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

नन्दीश्वर पूज रचायें जिनवर के गुण हम गायें
जिनवर भक्ति सुखकारी अघ रोग शोक निर्वारि ।
स्वाभाविक बने जिनालय बावन मनहर हैं आलय
सब में शताष्ट जिन प्रतिमा कह सकता कौन है महिमा ॥
जिनबिम्बन की वर पूजा करता न मिले भव दूजा
वह जनन मरण को नाशे मिथ्यामति मोह विनाशे ॥
है जीवन सफल उन्हीं का रचते जो यज्ञ अनोखा
आओ इसमें अघ होमें समकित के बीज भी बोवें ॥

ओं ह्रीं श्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घावली

(पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुख)

आठ गुणों से बढ़ता जाऊँ, आठ मदों को मैं नाशूँ,
तीन मूढ़ताओं को तज के, निज आतम को पहचानूँ ।
आठों द्रव्यों को एकत्रित करके अर्घ चढ़ाता हूँ,
सिद्धों के भी आठ गुणों को, इस अवसर पर ध्याता हूँ ॥1॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुख-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्व-दिशागताष्ट-रतिकरगिरि)

पानीय चन्दन सुतण्डुल पुष्प दीप
नैवेद्य धूप फल थाल सभी समीप
एकत्र अर्घ्य अठ पूजन द्रव्य द्वारा
पाने अनर्घ्य पद अर्पित थाल सारा ॥१॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दक्षिण-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुख)

ले नीर झारी सितचन्दनादि
औ अक्षतादी कुसुमादि खाद्य।
लौ दीप ले धूप फलादि सारे
सुचैत्य पूजो कर अर्घ लारे।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दक्षिण-दिशागताष्ट-रतिकरगिरि)

आठ मदों को नितप्रति जीतें, सहज सरल मन भाव रखूँ
समकित का मल मद ही होता, इसे कभी ना पास रखूँ।
आठ द्रव्य से पूजा का यह, अर्घ समर्पित चरणन है
सम्यग्दर्शन निर्मल होवे, तन मन अर्पित चरणन है।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अष्टरतिकरगिरि-जिनालयस्थ- जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पश्चिम-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुख)

एक एक गुण की चाहत में, खण्ड-खण्ड इच्छा होती
सभी द्रव्य को मिला एककर, मम इच्छा पूरी होती।
अर्घ बनाकर अष्ट द्रव्य का फल अनर्घ्य पद को पाने
आप चरण में चढा रहा प्रभु, आप सरीखा सुख पाने।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पश्चिम-दिशागताष्ट-रतिकरगिरि)

पानीय चन्दन अक्षत, पुष्प को मिला के
नैवेद्य दीप धूप, फल संग ला के ।
अर्घ्य है बनाया प्रभुवर, जैसा भी आया
पूजा हो नन्दीश्वर की, मनुज जनम पाया ॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्या अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उत्तर-दिशागताञ्जन गिरि-दधिमुख)

जल चन्दन अक्षत पुष्पों को, चरुदीप धूप फल से मेलूँ
अठ द्रव्यों का मैं अर्घ बना सिद्धों के आठ गुणों को लूँ ।
नन्दीश्वर की पूजा करते अरु अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से बढ़कर तीनों पर्वत जो पूज करें ॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उत्तर-दिशागताष्ट-रतिकरगिरि)

जल चन्दन अक्षत पुष्पों से, नैवेद्यों से दीपों से
धूप सुगन्धित प्रासुक फल से, अष्ट द्रव्य को चावों से ।
प्रभो समर्पित आज कर रहा, फल अनर्घ्य की चाह लिए
जिनदर्शन से निजदर्शन हो, पूजा का यह भाव लिए ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्टरतिकरपर्वतस्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्या नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम पूजा

(स्थापना)

पूर्व दिशा के अंजन दधिमुख, गिरिवर पर जो जिन आलय,
उनमें राजित जिनबिम्बों की, पूजा अर्चन का आश्रय ।
अष्टाह्निक में नन्दीश्वर की, पूजा शाश्वत सुर करते,
नर नारी हम सब मिल करके, थापन आह्वानन करते ।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब- समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-स्थिताकृत्रिम जिनालयस्थ-जिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब- समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जिनवर जिन आलय अकृत्रिम, होते हैं या ना होते,
इस शंका से मिथ्यामति से, सभी जीव दुख हैं ढोते ।
निःशंकित हो जिनवर ध्याऊँ, जिन आलय गुणगान करूँ,
प्रासुक उदक चढ़ा जिन चरणा, सिद्धालय प्रस्थान करूँ।।1।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा से मन की इच्छायें, पूरण हो इस आशय से,
भव-भव में तृष्णा की नागिन, डसती आई शुभाशय से ।

हे प्रभु भोगों की आकांक्षा, नाश बनूँ मैं निःकांक्षित,
चन्दन अर्पित करता हर्षित, होकर श्रीजिन ! निर्वांक्षित ॥2॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-स्थिताकृत्रिम जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुजन के तन देख मलिन मैं, ग्लानि सदा करता आया,
रत्नत्रय को अनदेखा कर, तनमद में ही भरमाया ।
निर्विचिकित्सा गुण को पाऊँ, अक्षय सम्यग्दर्शन हो,
अक्षत अर्पित चरणन करता, नन्दीश्वर जिन दर्शन हो ॥3॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक ढोंगी पाखण्डी की, अचरजकारी बातों से,
मूढ बना ठगता आया हूँ, खुद ही मिथ्यापन्थों से ।
पुष्प चढ़ा के मूढ कामना, आज नशाने आया हूँ,
भव-भव में निर्मूढ रहूँ मैं, भाव यही बस भाया हूँ॥4॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज दोषों को ढककर मैंने, पर दोषों को प्रकटाया,
इससे हर्षित होकर ही तो, मन का मैल न धुल पाया ।
व्यंजन अर्पित करके अब मैं, उपगूहन गुण पाऊँगा,
जिन-वर जिनमुनि के गुण गाकर, निज दोषों पर रोऊँगा ॥5॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काम क्रोध मद से आलस से, गिरता सहधर्मी को देख,
मैंने उसको और गिराया, गर्वित हो ना लख विधि लेख
संस्थिति करना जिनमारग में, सम्यग्दर्शन का है अंग,
दीप चढाऊँ ज्ञान ये पाऊँ, मोहमहातम का हो भंग ।।6।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुख स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धार्मिकपन की चादर ओढी, सहधर्मी से द्वेष किया,
प्रेमभाव की धार हृदय में, कभी कहीं ना नेह किया ।
वत्सलता की धूप सुगंधित, चेतन में चहुँ ओर बहे,
धूप चढ़ाता द्वेष नशाता, पूजन से सम्यक्त्व लहे ।।7।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुख-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पूजा से जिन तीर्थों से, जिनआलय जिनवाणी से,
सम्यक् तप से संज्ञानों से, जिनमत वर्धन हो हमसे ।
ऐसा भाव प्रभावन का हो, जिसमें मद का लेश न हो,
मोक्ष महाफल पाने हेतू, फल अर्पित जिन चरणन हो ।।8।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुख-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ गुणों से बढ़ता जाऊँ, आठ मदों को मैं नाशूँ,
तीन मूढ़ताओं को तज के, निज आतम को पहचानूँ ।
आठों द्रव्यों को एकत्रित करके अर्घ चढ़ाता हूँ,
सिद्धों के भी आठ गुणों को, इस अवसर पर ध्याता हूँ ।।9।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताञ्जनगिरि-दधिमुख-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ते : सुन्दर रूपं

भक्ति से सुन्दर रूप की प्राप्ति होती है।

आ. समन्तभद्र स्वामी

पूर्वदिशागत अञ्जनगिरि एवं दधिमुखस्थित अकृत्रिम जिनबिम्बों की अर्घ्यावली

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशागत-अञ्जनगिरि-दधिमुखस्थिता कृत्रिम-जिनालये सौम्यरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

ओं ह्रीं अर्हं जितकषाय-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

ओं ह्रीं अर्हं सर्वहितङ्कर-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

ओं ह्रीं अर्हं सुखकर-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

ओं ह्रीं अर्हं धर्मरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

ओं ह्रीं अर्हं ज्ञानरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

ओं ह्रीं अर्हं ध्यानमय-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

ओं ह्रीं अर्हं नासाग्रदृष्टि-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

ओं ह्रीं अर्हं सौम्यदृष्टि-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रसन्नदृष्टि-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

ओं ह्रीं अर्हं दूरदृष्टि-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

ओं ह्रीं अर्हं सर्वदर्शि-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

ओं ह्रीं अर्हं सर्वज्ञानि-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

ओं ह्रीं अर्हं सर्वजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

ओं ह्रीं अर्हं हतदोष-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

ओं ह्रीं अर्हं भासुरदेह-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

ओं ह्रीं अर्हं तप्तकाञ्चनदेह-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

ओं ह्रीं अर्हं मोक्षरूपजिन-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

ओं ह्रीं अर्हं मुक्तिमार्गदेशक-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

ओं ह्रीं अर्हं सकलदोषहर-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

ओं ह्रीं अर्हं सौख्यरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

ओं ह्रीं अर्हं गतमोह-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

ओं ह्रीं अर्हं कल्मषरहित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

ओं ह्रीं अर्हं कायरहित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

ओं ह्रीं अर्हं हतदुर्नय-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।
ओं ह्रीं अर्हं अनन्तशक्ति-समन्वित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।
ओं ह्रीं अर्हं अनन्तसुख-समन्वित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।
ओं ह्रीं अर्हं अद्भुत-देह-दीप्तिधर-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।
ओं ह्रीं अर्हं महाकान्तिधर-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।
ओं ह्रीं अर्हं महावीर्य-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।
ओं ह्रीं अर्हं महाधैर्यधृग्जिन-चैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।
ओं ह्रीं अर्हं महाज्ञानधृग्जिन-चैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।
ओं ह्रीं अर्हं महावपुर्जिन-चैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।
ओं ह्रीं अर्हं महामौनयुत-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।34।।
ओं ह्रीं अर्हं महाशान्तियुत-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।35।।
ओं ह्रीं अर्हं महामैत्रीयुत-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।36।।
ओं ह्रीं अर्हं महाकारूणिक-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।37।।
ओं ह्रीं अर्हं महाशीलयुत-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।38।।
ओं ह्रीं अर्हं महागुणसंयुक्त-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।39।।
ओं ह्रीं अर्हं गुणधर-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।40।।
ओं ह्रीं अर्हं गुणपोषक-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।41।।
ओं ह्रीं अर्हं गुणख्यापक-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।42।।
ओं ह्रीं अर्हं सिद्धरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।43।।
ओं ह्रीं अर्हं शुद्धरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।44।।
ओं ह्रीं अर्हं निसर्गशुद्ध-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।45।।
ओं ह्रीं अर्हं निर्मलदेहधृज्-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।46।।
ओं ह्रीं अर्हं रजोरहितदेहधृज्-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।47।।
ओं ह्रीं अर्हं म्लानरहित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।48।।
ओं ह्रीं अर्हं कालुष्यरहित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।49।।
ओं ह्रीं अर्हं निरञ्जन-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।50।।
ओं ह्रीं अर्हं मदभञ्जन-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।51।।
ओं ह्रीं अर्हं निर्मदरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।52।।
ओं ह्रीं अर्हं प्रहसितरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।53।।
ओं ह्रीं अर्हं कनत्काञ्चन-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।54।।

ओं ह्रीं अर्हं मुक्तिदूत-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥55॥
ओं ह्रीं अर्हं शिवरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥56॥
ओं ह्रीं अर्हं शिवङ्कर-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥57॥
ओं ह्रीं अर्हं मन्मथमन्थन-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥58॥
ओं ह्रीं अर्हं मोक्षरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥59॥
ओं ह्रीं अर्हं मोहभञ्जक-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥60॥
ओं ह्रीं अर्हं मारजित्-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥61॥
ओं ह्रीं अर्हं कामजित्-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥62॥
ओं ह्रीं अर्हं ब्रह्मरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥63॥
ओं ह्रीं अर्हं शुद्धात्मरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥64॥
ओं ह्रीं अर्हं शुद्धदेहरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥65॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वदेहरहित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥66॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्मुक्त-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥67॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्बन्ध-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥68॥
ओं ह्रीं अर्हं निश्श्रेष्ट-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥69॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्वैर-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥70॥
ओं ह्रीं अर्हं निरवद्य-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥71॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्नाम-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥72॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्भय-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥73॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्वस्त्र-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥74॥
ओं ह्रीं अर्हं निष्काम-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥75॥
ओं ह्रीं अर्हं निःसीम-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥76॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्लेप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥77॥
ओं ह्रीं अर्हं निःशब्द-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥78॥
ओं ह्रीं अर्हं निस्तरङ्ग-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥79॥
ओं ह्रीं अर्हं निष्कलङ्क-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥80॥
ओं ह्रीं अर्हं निष्कष्ट-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥81॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्बाध-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥82॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्लोभ-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥83॥
ओं ह्रीं अर्हं निराहार-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥84॥

ओं ह्रीं अर्हं निरहङ्कार-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥85॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्भेष-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥86॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्वेष-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥87॥
ओं ह्रीं अर्हं निराभरण-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥88॥
ओं ह्रीं अर्हं निरावरण-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥89॥
ओं ह्रीं अर्हं निरालम्ब-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥90॥
ओं ह्रीं अर्हं निरस्तैनो-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥91॥
ओं ह्रीं अर्हं निराबाध-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥92॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्निमेष-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥93॥
ओं ह्रीं अर्हं निरूप्लव-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥94॥
ओं ह्रीं अर्हं निरूपद्रव-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥95॥
ओं ह्रीं अर्हं निरूपदिष्ट-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥96॥
ओं ह्रीं अर्हं निरूपसर्ग-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥97॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्निर्माण-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥98॥
ओं ह्रीं अर्हं सुरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥99॥
ओं ह्रीं अर्हं सुगन्धित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥100॥
ओं ह्रीं अर्हं सुधर्मरूप-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥101॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वोत्कृष्ट-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥102॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वांगशोभित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥103॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वाभिलषित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥104॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वारम्भरहित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥105॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वार्थसिद्धिप्रद-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥106॥
ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीप-शोभित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥107॥
ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीप-स्थित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥108॥

पूर्णार्घ्य

(द्रुतविलम्बित छन्द)

जल सुचन्दन अक्षत द्रव्य लें, कुसुम व्यंजनमिष्ट सुथाल से
चरण दीपक धूप फलार्घ्य से, नित नमूँ बच लूँ भवपङ्क से।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशागत अञ्जनगिरि-दधिमुख स्थिताकृत्रिम-जिनालये शताष्ट-जिनबिम्बेभ्यो नमः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय पूजा

(स्थापना)

(वसन्ततिलका छंद)

नन्दीश्वराष्टमसुदीप महाधरा पे ।
अष्टाह्निका वसुदिवा रजनी जहाँ पे
एकाग्र हो सुरसुरी बिन खेद पूजें
आह्वान से हम यहाँ कर थाप पूजें ॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब-समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब-समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब-समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गंगा नदी जल पवित्र निसर्ग से है
तो भी नहीं जनन मृत्यु जरा हरे है ।
देवाधिदेव पद पंकज भक्ति वारे
पानीय अर्पित अतः पद दो सहारे ॥1॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु- विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चन्दनादि सब वस्तु यहाँ दिखें हैं
वे शैत्यदायि सुख भासित सी लगे हैं
पै शान्ति तोष मन को तव चिन्तने से
पाता अतः तव सुपूजन चन्दनं ले ॥2॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ले हाथ में सुसित अक्षत पुंज पूरा
पादारविन्द महिमा लख के रखूँगा ।
ऐसा समर्पण मुझे पद अक्षतार्थं
पूजा अतः कर चढ़ा शुभ अक्षतों से ।।3।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मैं काम भाव अघ नाशन हेतु आया
हे वीत काम ! तव पाद सरोज पाया ।
ये पुष्प दिव्य सबरे लगते भले हैं
दिव्याति दिव्य पद से बढ़कर नहीं हैं।।4।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः कामबाण- विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य नाम सुनते रसना रसीली
पूर्ति न व्यंजन करें हर वक्त गीली ।
सो वेदना उदर की जड़ से मिटाने
पूजूँ रखूँ तब पदाग्र, क्षुधा नशाने ।।5।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः क्षुधारोग- विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार मन का बढ़ता हि जावे
सद्ध्यान जाप कुछ भी न समर्थ पावे ।
जौ लों करूँ चरण पूजन मोह तौ लों
है दूर भासत अतः यह दीप की लौ ।।6।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व- दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोहांधकार- विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्माष्ट नष्ट जिन पूजन से हि होंगे
वे दुष्ट भाव रति द्वेष सभी मिटेंगे ।
मैं ले सुगन्धमय प्रासुक दिव्य धूप
खेता अतः अनल में लख चैत्य रूप ।।7।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं बड़े पक गए अति शुष्क होके
ऐसे अचित्त फल ले करुणार्द्र होके ।
देवाधिदेव पद पङ्कज पूजता हूँ
अत्यन्त श्रेष्ठ फल मोक्ष विचारता हूँ ।।8।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पानीय चन्दन सुतण्डुल पुष्प दीप
नैवेद्य धूप फल थाल सभी समीप
एकत्र अर्घ अठ पूजन द्रव्य द्वारा
पाने अनर्घ्य पद अर्पित थाल सारा ।।9।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागताष्ट-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विणओ मोक्खद्दारं।
विनय मोक्ष का द्वार है।

पूर्वदिशागत रतिकर स्थित अकृत्रिम जिनबिम्बों की अर्घ्यावली

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-दिशागत-रतिकर स्थिताकृत्रिम जिनालये अनंगमथनाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥
ओं ह्रीं अर्हं जितकामाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥
ओं ह्रीं अर्हं सकलार्तहराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥
ओं ह्रीं अर्हं सकललोकहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वांगशोभिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशांकुशाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वभावविदे जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥
ओं ह्रीं अर्हं अशेषाङ्गमनोहराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वभेदज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥
ओं ह्रीं अर्हं सामान्यवस्तुधर्मज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥
ओं ह्रीं अर्हं विशेषभेदज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥
ओं ह्रीं अर्हं समस्तदुःखापहराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥
ओं ह्रीं अर्हं क्लेशरहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥
ओं ह्रीं अर्हं संक्लेशमार्ग-विनाशकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥
ओं ह्रीं अर्हं संक्लेशाध्यवसान-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥
ओं ह्रीं अर्हं संक्लेश-हेतु-शून्याय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वविशुद्धिप्रदाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥
ओं ह्रीं अर्हं विशुद्धिमार्गणाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥
ओं ह्रीं अर्हं विशुद्धभावाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वविशुद्धगुणाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥
ओं ह्रीं अर्हं विशुद्धियुतजनसेविताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥
ओं ह्रीं अर्हं विशुद्धमार्गाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥
ओं ह्रीं अर्हं आत्मशुद्धिकराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥
ओं ह्रीं अर्हं शुद्धिहेतुभूताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥25॥
ओं ह्रीं अर्हं मनःशुद्धिकारकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥26॥
ओं ह्रीं अर्हं मनःशुद्धिहेतवे जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥27॥

ओं ह्रीं अर्हं पूर्वजन्मसंस्कारनाशकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥28॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-विनाशहेतवे जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥29॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धवासना-विनाशकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥30॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-रजोहराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥31॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धविधि-निर्जरणाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥32॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-संवरकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥33॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-संवरकारणाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥34॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-स्थिति-विनाशकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥35॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्मानुभाग-शक्तिशून्यकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥36॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-मूलविनाशकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥37॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-निर्मूलनभावाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥38॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-कारणज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥39॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-परिवर्तनसमर्थाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥40॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-संक्रमणकराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥41॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्म-हराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥42॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वबद्धकर्मापकर्षणाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥43॥
ओं ह्रीं अर्हं हेमवर्णाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥44॥
ओं ह्रीं अर्हं रजतवर्णाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥45॥
ओं ह्रीं अर्हं धौतकलधौताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥46॥
ओं ह्रीं अर्हं धातुसंज्ञाविशेषाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥47॥
ओं ह्रीं अर्हं संज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥48॥
ओं ह्रीं अर्हं संज्ञापहरणाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥49॥
ओं ह्रीं अर्हं आहार-संज्ञा-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥50॥
ओं ह्रीं अर्हं भयसंज्ञा-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥51॥
ओं ह्रीं अर्हं मैथुनसंज्ञा-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥52॥
ओं ह्रीं अर्हं परिग्रहसंज्ञा-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥53॥
ओं ह्रीं अर्हं निद्रासंज्ञा-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥54॥
ओं ह्रीं अर्हं कामसंज्ञा-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥55॥
ओं ह्रीं अर्हं अमूर्ताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥56॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वसंग-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥57॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्लेपाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥58॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्लेप-शोभिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥59॥
ओं ह्रीं अर्हं लेपावश्यक-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥60॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्लेपकारणाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥61॥
ओं ह्रीं अर्हं संज्ञ्यसंज्ञिभेद-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥62॥
ओं ह्रीं अर्हं असंज्ञिसंज्ञिकराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥63॥
ओं ह्रीं अर्हं अपुण्य-पुण्यकराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥64॥
ओं ह्रीं अर्हं बन्धकाबन्धकराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥65॥
ओं ह्रीं अर्हं भवजाभवकारकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥66॥
ओं ह्रीं अर्हं अबन्धाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥67॥
ओं ह्रीं अर्हं अबन्धसूत्रदेशकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥68॥
ओं ह्रीं अर्हं अबन्धस्थितिज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥69॥
ओं ह्रीं अर्हं अबन्धमर्मज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥70॥
ओं ह्रीं अर्हं अकारण-बन्धवे जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥71॥
ओं ह्रीं अर्हं अशेष-बन्धवे जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥72॥
ओं ह्रीं अर्हं बन्धु-बान्धवरहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥73॥
ओं ह्रीं अर्हं बन्धु-बन्धनरहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥74॥
ओं ह्रीं अर्हं बन्ध-विशोषकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥75॥
ओं ह्रीं अर्हं बन्ध-निर्मूलनकराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥76॥
ओं ह्रीं अर्हं बन्ध-कारणज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥77॥
ओं ह्रीं अर्हं तीव्र-बन्ध-हेतुज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥78॥
ओं ह्रीं अर्हं मन्द-बन्ध-विज्ञाताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥79॥
ओं ह्रीं अर्हं तीव्रतर-बन्धज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥80॥
ओं ह्रीं अर्हं तीव्रतम-बन्धज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥81॥
ओं ह्रीं अर्हं मन्दतर-बन्धविज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥82॥
ओं ह्रीं अर्हं मन्दतम-बन्धविज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥83॥
ओं ह्रीं अर्हं मन्दमन्दतर-मध्यमभेदज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥84॥
ओं ह्रीं अर्हं मन्दतर-मन्दतम-भेदज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥85॥
ओं ह्रीं अर्हं तीव्रतीव्रतर-बन्धनभेदज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥86॥
ओं ह्रीं अर्हं तीव्रतीव्रतम-मध्यमविकल्पज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥87॥

ओं ह्रीं अर्हं तीव्रतर-तीव्रतम-बंध-विकल्पज्ञाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥88॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वविशुद्ध्यंग-धारकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥89॥
ओं ह्रीं अर्हं कषाय-परिणाम-रहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥90॥
ओं ह्रीं अर्हं कषाय-क्लेशशून्याय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥91॥
ओं ह्रीं अर्हं कषाय-लेशरहिताय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥92॥
ओं ह्रीं अर्हं अकषायाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥93॥
ओं ह्रीं अर्हं कषायकष्टविनष्टाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥94॥
ओं ह्रीं अर्हं विगतषोडश-कषायाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥95॥
ओं ह्रीं अर्हं जित-नोकषायशत्रवे जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥96॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वविद्येश्वराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥97॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वागमकोविदे जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥98॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वागमाधाराय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥99॥
ओं ह्रीं अर्हं द्वादशाङ्ग-स्वरूपाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥100॥
ओं ह्रीं अर्हं स्पष्ट-शास्त्राय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥101॥
ओं ह्रीं अर्हं स्पष्टोपदेशक-रूपाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥102॥
ओं ह्रीं अर्हं स्पष्टमिष्टोपदेशकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥103॥
ओं ह्रीं अर्हं भव्यजीवेष्ट-बोधकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥104॥
ओं ह्रीं अर्हं निस्सार-संसार-दर्शकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥105॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वशक्ति-सम्पन्नाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥106॥
ओं ह्रीं अर्हं भव्यजीव-प्रबोधकाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥107॥
ओं ह्रीं अर्हं भव्यैकशरणाय जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥108॥

पूर्णार्घ्यं

(वसन्ततिलका)

जो हैं अपार गुणशोभित सौख्यकारी
निष्काम रंजनविहीन मन रंजकारी।
पा के सुदर्श जिनका सुर हर्ष धारें
चिन्तै मनुष्य यदि तो सब दुःख वारे॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशागत-रतिकरगिरि-जिनालयस्थ-शताष्ट-जिनचैत्येभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय पूजा

(उपजाति छन्द)

(स्थापना)

हे देवता मैं चरणों समाया
मैं पूजने अष्टम द्वीप आया ।
आह्वान थापूँ हिय में विराजो
मेरे सभी बन्ध अभी भगा दो ।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

संसार में नीर मलापहारी
माना गया पै अघ नापहारी ।
पानीय धारा चरणारविन्दे
अर्पूं कटें जन्म मरणान्तफंदे ।।1।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः जन्म-जरा मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं चित्त ठंडा करने कि चाहूँ
पै व्याकुली हो भ्रमता हि जाऊँ।
ले चन्दनादी करता सुपूजा
ना पा सकूँ मैं भव कोइ दूजा ।।2।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः संसार-ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ये अक्षतादी सब टूट जाते
ये नाशवन्ते नहि काम आते ।
पाने अखण्डाक्षत बोध धाम
चढ़ा रहा देव विदेहधाम ।।3।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों लखूँ खूब सुगन्ध सूंघूं
औ चित्त में चंचल काम बोऊँ।
इसीलिए आज चढ़ा अकामी
पूज प्रभू पूर्ण बनूँ अनामी ।।4।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खाया गया व्यंजन सार सारा
मिटी नहीं भूख बढ़ी अपारा ।
क्या काम नैवेद्य अतः चढ़ाऊँ
क्षुधाविनाशी जिन पाद ध्याऊँ।।5।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकारी जनता विचारी
ना आत्म जाने सुधि क्यों विसारी
मैं धन्यभागी मति मोह भागी
अर्पूं प्रभू दीपक जोत जागी ।।6।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले धूप सौंधी अगनी में डालूँ
ऐसा लगे कर्मन वार डालूँ ।
पै ध्यान वन्हि यदि ना जलेगी
कर्माष्ट मुक्ति किसको मिलेगी ॥7॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला सुपारी अखरोट पिस्ता
बादाम मेवा सब भोग सस्ता ।
है मोक्ष मेवा सबसे अनोखी
पूजूं जिनेशा पद बात चोखी ॥8॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले नीर झारी सितचन्दनादि
औ अक्षतादी कुसुमादि खाद्य ।
लौ दीप ले धूप फलादि सारे
सुचैत्य पूजो कर अर्घ लारे ॥9॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अंजनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

दक्षिण दिशागत अंजनगिरि-दधिमुख स्थित अकृत्रिम जिनबिम्बों की अर्घ्यावली

ओं ह्रीं अर्हं स्वेदरहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥1॥
ओं ह्रीं अर्हं मलरहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥2॥
ओं ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराच-संहननसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥3॥
ओं ह्रीं अर्हं समचतुरस्र-संस्थानसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥4॥
ओं ह्रीं अर्हं सुगन्धितदेहसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥5॥
ओं ह्रीं अर्हं सुरूपसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥6॥
ओं ह्रीं अर्हं शुभलक्षणसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥7॥
ओं ह्रीं अर्हं श्वेतरक्तसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥8॥
ओं ह्रीं अर्हं मधुरवचनसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥9॥
ओं ह्रीं अर्हं अतुलशक्तिसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥10॥
ओं ह्रीं अर्हं शतयोजन-सुभिक्षकर-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥11॥
ओं ह्रीं अर्हं आकाशगमनातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥12॥
ओं ह्रीं अर्हं प्राणीवधाभावातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥13॥
ओं ह्रीं अर्हं उपसर्गरहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥14॥
ओं ह्रीं अर्हं कवलाहाररहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥15॥
ओं ह्रीं अर्हं चतुर्मुखशोभित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥16॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वविद्याधिपति-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥17॥
ओं ह्रीं अर्हं छायारहित-देहयुक्त-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥18॥
ओं ह्रीं अर्हं नखकेशवृद्धिरहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥19॥
ओं ह्रीं अर्हं अनिमेषदृष्टिसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥20॥
ओं ह्रीं अर्हं सार्वार्धमागधी-भाषाहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥21॥
ओं ह्रीं अर्हं मैत्रीभावसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥22॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वर्तुफलातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥23॥
ओं ह्रीं अर्हं दर्पणसमभूम्यतिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥24॥
ओं ह्रीं अर्हं सुगन्धित पवनातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥25॥
ओं ह्रीं अर्हं अनुकूलपवनातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥26॥
ओं ह्रीं अर्हं भूकंटकरहितातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥27॥
ओं ह्रीं अर्हं गन्धोदकवृष्टिसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥28॥

ओं ह्रीं अर्हं पदतल कमलरचनातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥29॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्मलगगनातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥30॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्व दिशानिर्मलातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥31॥
ओं ह्रीं अर्हं आह्वानातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥32॥
ओं ह्रीं अर्हं समृद्धभूम्यतिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥33॥
ओं ह्रीं अर्हं धर्मचक्रातिशयसहित-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥34॥
ओं ह्रीं अर्हं अनन्तज्ञानसहित-सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥35॥
ओं ह्रीं अर्हं अनन्तदर्शनसहित-सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥36॥
ओं ह्रीं अर्हं वेदनीयकर्मरहित-सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥37॥
ओं ह्रीं अर्हं मोहकर्मरहित-सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥38॥
ओं ह्रीं अर्हं आयुकर्मरहित-सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥39॥
ओं ह्रीं अर्हं नामकर्मरहित-सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥40॥
ओं ह्रीं अर्हं गोत्रकर्मरहित-सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥41॥
ओं ह्रीं अर्हं अन्तरायकर्मरहित-सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥42॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तमक्षमाधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥43॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तममार्दवधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥44॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तमआर्जवधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥45॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तमशौचधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥46॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥47॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥48॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तमतपःधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥49॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥50॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तमाकिंचन्यधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥51॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥52॥
ओं ह्रीं अर्हं अनशनतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥53॥
ओं ह्रीं अर्हं ऊनोदरतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥54॥
ओं ह्रीं अर्हं वृत्तिपरिसंख्यानतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥55॥
ओं ह्रीं अर्हं रसपरित्यागतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥56॥
ओं ह्रीं अर्हं विविक्तशय्यासनतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥57॥
ओं ह्रीं अर्हं कायक्लेशतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥58॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रायश्चित्ततपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥59॥
ओं ह्रीं अर्हं विनयतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥60॥
ओं ह्रीं अर्हं वैयावृत्यतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥61॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वाध्यायतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥62॥
ओं ह्रीं अर्हं व्युत्सर्गतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥63॥
ओं ह्रीं अर्हं ध्यानतपः सहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥64॥
ओं ह्रीं अर्हं समतावश्यकसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥65॥
ओं ह्रीं अर्हं स्तवावश्यकसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥66॥
ओं ह्रीं अर्हं वन्दनावश्यकसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥67॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रतिक्रमणावश्यकसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥68॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानावश्यकसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥69॥
ओं ह्रीं अर्हं कायोत्सर्गावश्यकसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥70॥
ओं ह्रीं अर्हं दर्शनाचारसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥71॥
ओं ह्रीं अर्हं ज्ञानाचारसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥72॥
ओं ह्रीं अर्हं चारित्राचारसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥73॥
ओं ह्रीं अर्हं वीर्याचारसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥74॥
ओं ह्रीं अर्हं तपः आचारसहिताचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥75॥
ओं ह्रीं अर्हं मनोगुप्तिधारकाचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥76॥
ओं ह्रीं अर्हं वचनगुप्तिधारकाचार्य-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥77॥
ओं ह्रीं अर्हं कायगुप्तिधारकाचार्य- परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥78॥
ओं ह्रीं अर्हं उपाध्याय-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥79॥
ओं ह्रीं अर्हं धर्मोपदेशक-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥80॥
ओं ह्रीं अर्हं अहिंसामहाव्रतसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥81॥
ओं ह्रीं अर्हं सत्यमहाव्रतसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥82॥
ओं ह्रीं अर्हं अचौर्यमहाव्रतसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥83॥
ओं ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥84॥
ओं ह्रीं अर्हं अपरिग्रहमहाव्रतसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥85॥
ओं ह्रीं अर्हं ईर्यासमितिसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥86॥
ओं ह्रीं अर्हं भाषासमितिसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥87॥
ओं ह्रीं अर्हं एषणासमितिसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥88॥

ओं ह्रीं अर्हं आदाननिक्षेपणसमितिसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥89॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठापनसमितिसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥90॥

ओं ह्रीं अर्हं स्पर्शनेन्द्रियजयसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥91॥

ओं ह्रीं अर्हं रसनेन्द्रियजयसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥92॥

ओं ह्रीं अर्हं घ्राणेन्द्रियजयसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥93॥

ओं ह्रीं अर्हं चक्षुरिन्द्रियजयसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥94॥

ओं ह्रीं अर्हं कर्णेन्द्रियजयसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥95॥

ओं ह्रीं अर्हं सामायिकावश्यकसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥96॥

ओं ह्रीं अर्हं स्तवावश्यकसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥97॥

ओं ह्रीं अर्हं वन्दनावश्यकसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥98॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रतिक्रमणावश्यकसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥99॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानावश्यकसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥100॥

ओं ह्रीं अर्हं कायोत्सर्गावश्यकसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥101॥

ओं ह्रीं अर्हं भूमिशयनमूलगुणसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥102॥

ओं ह्रीं अर्हं अचेलकमूलगुणसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥103॥

ओं ह्रीं अर्हं केशलुंचनमूलगुणसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥104॥

ओं ह्रीं अर्हं एकभुक्तिमूलगुणसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥105॥

ओं ह्रीं अर्हं स्थितिभुक्तिमूलगुणसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥106॥

ओं ह्रीं अर्हं अदन्तधावनमूलगुणसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥107॥

ओं ह्रीं अर्हं अस्नानमूलगुणसहित-साधु-परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥108॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

बैठ जिनालय चिन्तवें, पंच परम गुरू आज।
मन में जिन भक्ति भरे, भाव शुद्ध के काज॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशागत-अंजनगिरिदधिमुख-पर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालये सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

चतुर्थ पूजा

(स्थापना)

दक्षिण दिशि के रतिकर पर्वत, लाल-लाल अति शोभित हैं
शाश्वत जिनवर के आलय ये, सुरगण से नित पूजित हैं।
अठरतिकर जिनवर आलय का, आह्वानन थापन करके
पूजन करके भक्तिभाव से, पार लगूँगा भवदधि से ॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अष्टरतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब-समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अष्टरतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अष्टरतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्ब-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्. सन्निधिकरणम्।

जैसे तरल सरल जल बहता, जहाँ रखे वैसा होता
ज्ञान हमारा सहज सरल त्यों, सुख दुख में समता बोता।
ऐसा निर्मद ज्ञान प्राप्त हो, जन्म-जरामृति नाशक जो
जल अर्पण है इसी हेतु से, भवदुख नाशक पदरज जो ॥1॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अष्टरतिकरगिरि जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः जन्म-जरा- मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करके तीरथ करके, धर्म किया मद ही पाया
पूजा मद से मेरा मन तो, मुक्त नहीं क्यों हो पाया।
यही सोचकर तब चरणन में, निर्मद होने आया हूँ
चन्दन अर्पित करके जिनवर, भक्ति करने आया हूँ ॥2॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि अष्टरतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः संसार- ताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे दादा और पिताजी, बड़े-बड़े पद के धारी
कुलमद से मैं मानी बन के, बना रहा मिथ्याधारी ।
अक्षतपद को पाने जिनवर अक्षत चरणन अर्पित है
कुलमद ही भय दुख दायक है, जिनवर पद सुर अर्चित हैं ॥3॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि अष्टरतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिबबिम्बेभ्यो नमः अक्षयपद- प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे नाना मामा भाई, बड़े प्रतिष्ठित गौरव से
यही सोचकर मद जाति का, रखता आया भव भव से ।
पुष्प चढ़ाकर मद मैं नाशूं, जाति रहित आतम ध्याऊँ
जिनवर की भक्ति से सुखकर, पद शिवसुख का मैं पाऊँ ॥4॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अष्टरतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः कामबाण- विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोहक तन पोषणकारी, सौरभ युत अति रसधारी
खा खा व्यंजन तन ममता से, बलमद बढ़ता है भारी ।
इस मद बल के नाशन हेतू, व्यंजन अर्पित करता हूँ,
जिनवर पद की पूजा से ही, सम्यग्दर्शन लहता हूँ ॥5॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि-अष्टरतिकरगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः क्षुधारोग- विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन वैभव अरु मान प्रतिष्ठा, वाहन महल बनाये हैं
पुण्य उदय से प्राप्त ऋद्धि में, मन में गारव लाये हैं ।
मद का नाश करूँ अरु, सम्यग्दर्शन प्राप्त करूँ
इसी हेतु दीपक की ज्योति, चरण समर्पित अवस करूँ ॥6॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि - अष्टरतिकरगिरि - जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़ाव्रती हूँ त्यागी तपसी, बहु अनशन तपधारी हूँ
इस मद से मैं गर्वित होकर, मिथ्यामति मन धारी हूँ।
तपमद से समकित ना पाया, भूल समझ में आई है
इसी हेतु मैं धूप चढ़ाकर, मद नाशूँ मति आई है ॥7॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि - अष्टरतिकरगिरि - जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरा तन अति सुन्दर सुरभित, औ बलिष्ठ अलबेला है
तनमद से मेरा मन नित ही, भव भव में अति खेला है।
इसीलिए मेवा फल सारे, आप चरण में लाया हूँ
अर्पित करके फल शिव फल को, पाने में ललचाया हूँ ॥8॥

ओ ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि - अष्टरतिकरगिरि - जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्तये प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ मदों को नितप्रति जीतें, सहज सरल मन भाव रखूँ
समकित का मल मद ही होता, इसे कभी ना पास रखूँ।
आठ द्रव्य से पूजा का यह, अर्घ समर्पित चरणन है
सम्यग्दर्शन निर्मल होवे, तन मन अर्पित चरणन है ॥9॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धि - अष्टरतिकरगिरि - जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण-दिशागत- रतिकर- स्थित अकृत्रिम जिनबिम्बों की अर्घ्यावली

ओं ह्रीं अर्हं दक्षिणदिशि-रतिकर-पर्वत- स्थिताकृत्रिम जिनालये समयसारोपदेशक-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥1॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्बन्धात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥2॥

ओं ह्रीं अर्हं निरूपात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥3॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्लेपात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥4॥

ओं ह्रीं अर्हं नीरागात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥5॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्विकारात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥6॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्विकल्पात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥7॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्वेगात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥8॥

ओं ह्रीं अर्हं निःस्पन्दात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥9॥

ओं ह्रीं अर्हं निःप्रतिद्वन्द्वात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥10॥

ओं ह्रीं अर्हं निःप्रतिरोधात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥11॥

ओं ह्रीं अर्हं निश्चितज्ञानात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥12॥

ओं ह्रीं अर्हं निस्तरंगात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥13॥

ओं ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥14॥

ओं ह्रीं अर्हं निश्चेष्टात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥15॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्बद्धात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥16॥

ओं ह्रीं अर्हं नीरोगात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥17॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्विचारात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥18॥

ओं ह्रीं अर्हं निश्चलात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥19॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्वर्णात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥20॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्गन्धात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥21॥

ओं ह्रीं अर्हं नीरसात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥22॥

ओं ह्रीं अर्हं निःशब्दात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥23॥

ओं ह्रीं अर्हं निष्कपटात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥24॥

ओं ह्रीं अर्हं निरंजनात्म-समयसाराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥25॥

ओं ह्रीं अर्हं सुरासुरवन्दित-प्रवचनसार-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥26॥

ओं ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थ-प्रवर्द्धकाय प्रवचनसार-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥27॥

ओं ह्रीं अर्हं विशुद्धस्वभाव-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥28॥
ओं ह्रीं अर्हं श्रमणपंचाचार-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥29॥
ओं ह्रीं अर्हं मनुष्यक्षेत्रवर्ति-जिनार्हत-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥30॥
ओं ह्रीं अर्हं गणधरसेवित-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥31॥
ओं ह्रीं अर्हं विशुद्धज्ञानदर्शन-स्वभाव-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥32॥
ओं ह्रीं अर्हं चारित्रहेतु-मोक्ष-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥33॥
ओं ह्रीं अर्हं साम्यचारित्र-धर्म-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥34॥
ओं ह्रीं अर्हं मोहक्षोभरहित-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥35॥
ओं ह्रीं अर्हं धर्मपरिणत-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥36॥
ओं ह्रीं अर्हं शुभधर्मपरिणत-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥37॥
ओं ह्रीं अर्हं शुद्धधर्मपरिणत-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥38॥
ओं ह्रीं अर्हं अशुभाधर्मापरिणत-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥39॥
ओं ह्रीं अर्हं परिणामस्वभाव-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥40॥
ओं ह्रीं अर्हं परिणामस्वभावार्थ-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥41॥
ओं ह्रीं अर्हं द्रव्यगुणपर्यायार्थ-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥42॥
ओं ह्रीं अर्हं अस्तित्वनिर्वृत्तार्थ-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥43॥
ओं ह्रीं अर्हं शुद्धधर्मफलनिर्वाण-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥44॥
ओं ह्रीं अर्हं शुभधर्मफलस्वर्गसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥45॥
ओं ह्रीं अर्हं अशुभाधर्मफल-रहिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥46॥
ओं ह्रीं अर्हं अतिशयभूत-सिद्धसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥47॥
ओं ह्रीं अर्हं आत्मोत्थ-सिद्धसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥48॥
ओं ह्रीं अर्हं विषयातीत-सिद्धसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥49॥
ओं ह्रीं अर्हं अनुपम-सिद्धसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥50॥
ओं ह्रीं अर्हं अनन्त-सिद्धसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥51॥
ओं ह्रीं अर्हं अव्युच्छिन्न-सिद्धसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥52॥
ओं ह्रीं अर्हं शुद्धोपयोग-प्रसिद्ध-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥53॥
ओं ह्रीं अर्हं अत्यन्त-विलक्षण-सिद्धसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥54॥
ओं ह्रीं अर्हं अव्ययरूप-सिद्धसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥55॥
ओं ह्रीं अर्हं निरन्तर-प्रवर्तमान-सिद्धसुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥56॥
ओं ह्रीं अर्हं सूत्रार्थज्ञानप्रद-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥57॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वपरविभागज्ञान-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥58॥

ओं ह्रीं अर्हं सकलजीवनिकायरक्षा-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥59॥
ओं ह्रीं अर्हं पञ्चेन्द्रियाभिलाषा-रहिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥60॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वरूपविश्रान्त-निस्तरङ्ग-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥61॥
ओं ह्रीं अर्हं संयमतपोयुत-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥62॥
ओं ह्रीं अर्हं सकलमोहनीय-विजय-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥63॥
ओं ह्रीं अर्हं विगतराग-स्वभाव-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥64॥
ओं ह्रीं अर्हं सातासाता-वेदनविपाकविफल-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥65॥
ओं ह्रीं अर्हं सुख-दुःख-समभाव-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥66॥
ओं ह्रीं अर्हं उपयोग-विशुद्धात्मतत्त्व-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥67॥
ओं ह्रीं अर्हं विगतावरणात्म-तत्त्व-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥68॥
ओं ह्रीं अर्हं विगतान्तरायात्म-तत्त्व-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥69॥
ओं ह्रीं अर्हं विगतमोहरजोगतात्म-तत्त्व-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥70॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वयंभूतात्म-सुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥71॥
ओं ह्रीं अर्हं समस्तज्ञेयपार-भूत-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥72॥
ओं ह्रीं अर्हं लब्धात्म-स्वभाव-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥73॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वज्ञदशा-प्राप्त-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥74॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वलोक-पतिमहित-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥75॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वयंभू-स्वभाव-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥76॥
ओं ह्रीं अर्हं शुद्धोपयोग-प्रसादगत-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥77॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वभावभङ्गविहीन-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥78॥
ओं ह्रीं अर्हं अनपायि-स्वभावात्म-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥79॥
ओं ह्रीं अर्हं स्थितिसंभवनाश-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥80॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वार्थजातोत्पाद-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥81॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वार्थजातविनाश-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥82॥
ओं ह्रीं अर्हं केनचित्पर्यायेण ध्रौव्य-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥83॥
ओं ह्रीं अर्हं केनचित्पर्यायेण विनाश-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥84॥
ओं ह्रीं अर्हं केनचित्पर्यायेणोत्पाद-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥85॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वार्थजातस्थिति-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥86॥
ओं ह्रीं अर्हं उत्पादादित्रय-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥87॥
ओं ह्रीं अर्हं द्रव्यलक्षणास्तित्व-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥88॥

ओं ह्लीं अर्हं द्रव्यलक्षणावश्यंभावि-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥89॥
ओं ह्लीं अर्हं सर्वार्थवरिष्ठ-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥90॥
ओं ह्लीं अर्हं सर्वजनेष्ट-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥91॥
ओं ह्लीं अर्हं अमरासुरप्रधान-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥92॥
ओं ह्लीं अर्हं जिनदेव-श्रद्धानमहिमा-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥93॥
ओं ह्लीं अर्हं प्रक्षीणघातिकर्म-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥94॥
ओं ह्लीं अर्हं अनन्तवीर्यात्म-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥95॥
ओं ह्लीं अर्हं अधिकतेजो-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥96॥
ओं ह्लीं अर्हं अतीन्द्रिय-ज्ञान-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥97॥
ओं ह्लीं अर्हं अतीन्द्रिय-सुख-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥98॥
ओं ह्लीं अर्हं युगपज्ज्ञान-सुखपरिणत-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥99॥
ओं ह्लीं अर्हं देहगत-सुख-दुःख-रहिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥100॥
ओं ह्लीं अर्हं शुद्धस्फटिक-संकाशमूर्ति-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥101॥
ओं ह्लीं अर्हं तेजोमूर्तिमय-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥102॥
ओं ह्लीं अर्हं क्षीणदोष-स्वभाव-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥103॥
ओं ह्लीं अर्हं सप्त-धातु-वर्जितमूर्ति-रूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥104॥
ओं ह्लीं अर्हं नोकर्माहार-रहिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥105॥
ओं ह्लीं अर्हं कर्माहार-रहिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥106॥
ओं ह्लीं अर्हं कवलाहार-रहिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥107॥
ओं ह्लीं अर्हं ओजलेप्यमनोगताहार-रहिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥108॥

पूर्णार्घ्य

आप मौन हैं फिर भी जिनवर, प्रवचन मुख से झर झरते
आप दर्श से दिव्य ध्वनि का, प्रवचन सार भव्य समझे ।
आप रूप से आत्म रूप की, महिमा स्वयं कही जाती
इसीलिए यह अर्घ बनाके, अनर्घपद महिमा आती ॥

ओं ह्लीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशागत-रतिकर-पर्वत- स्थित-अकृत्रिम जिनालये शताष्ट -जिनबिम्बेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पाँचवी पूजा

(स्थापना)

मैं आठवाँ यह द्वीप पूजूँ, चाव से अतिभाव से
पश्चिम दिशा में शोभते, जो चैत्य स्वयं स्वभाव से।
आह्वान कर हृदि थापता, हूँ मम हृदय विराजिए
है भावना की शक्ति मुझमें, दोष को हर लीजिए ॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि - दधिमुखगिरि - जिनालयस्थ-जिनचैत्य-समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्य-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जन - गिरि - दधिमुखगिरि - जिनालयस्थ-जिनचैत्य समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छंद)

क्षीरोदधि का नीर पात्र में, मणिमय कलशा में भर के
जिनवर आगे भक्ति भाव से, धार अखण्डित त्रय करके।
जन्म जरा अन्तक नश जाएँ, त्रय व्याधी मम आतम की
समदृष्टि की परम भावना, पदवी पाऊँ स्वातम की ॥1॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः जन्म-जरा- मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर वचन सदा अति शीतल, दूर करें जग का संताप
जो संताप हरे जिनवाणी, वैसा हरे न कोई आप।
यही सोचकर चन्दन चन्दर रश्मि और कर्पूर पदार्थ
प्रभुपद का आश्रय लेते हैं, मैं भी पाने को परमार्थ ॥2॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ -जिनचैत्येभ्यो नमः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आप इन्द्रियों के वश में ना, आप महाभट वीर बने
आप सरीखे जिन माथे पर, वीरपट्ट विलसे वितने ।
तव पद आश्रय अर्पित शोभित, अक्षत पुंजों की पंक्ति
और कहाँ यह शोभित होगी, अतः आप पद में भक्ति ।।3।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मदन दर्प ना आप देह में, और नहीं मन में भी पाप
मन हर पुष्प हार मालायें, आप निकट हों शोभित आप ।
नहीं जहाँ पर वस्तु वहीं पर, आत्म मनोहर भाती है
मदन रहित जिनपद कमलों में, पुष्पमाल मन भाती है ।।4।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय बल को खूब बढ़ाते, ये व्यंजन सरसीले द्रव्य
इन्द्रिय बल का नाश किया है, आप अनोखा आतम द्रव्य ।
चरण अधः यह रखा द्रव्य सब, आप निकट शोभा पाता
सकल जगत के नयनोत्सव के, लिए बना है मन आता ।।5।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप शिखा वाली यह आरती प्रभु शरीर में प्रतिबिम्बित
मानो ढूंढ रही कर्मों को ध्यान अग्नि सी नित बिम्बित ।
मोह कर्म को ढूंढ जलाने, आप निकट में आया हूँ
यही प्रयोजन मात्र दीप को, पूजन अंग बनाया हूँ ।।6।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्य-जिनचैत्येभ्यो नमः मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूम अति उत्सव करता, मानी हर्षित नृत्य करे
पवन वेग से कम्पित होता, इधर चले या उधर गिरे ।
श्री जिनेन्द्र के आश्रय से यदि, जड़ में भी उल्लास बना
फिर मुझ सा संचेतन मन क्यों, धूप चढ़ाने करे मना ।।7।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः अष्टकर्म- दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर आप चखें परमातम, का यह परमानन्द महा
परमामृत है नाम उसी का, वही महाफल गया कहा ।
उस महान उत्कट फल पाने, मन अभिलाषा आज जगी
पूजा से सब फल मिलते हैं, फिर फल की क्यों आश जगी ।।8।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

एक एक गुण की चाहत में, खण्ड-खण्ड इच्छा होती
सभी द्रव्य को मिला एककर, मम इच्छा पूरी होती ।
अर्घ बनाकर अष्ट द्रव्य का, फल अनर्घ्य पद को पाने
आप चरण में चढा रहा प्रभु, आप सरीखा सुख पाने ।।9।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम-दिशागत-अंजनगिरि एवं दधिमुख -स्थित अकृत्रिम जिनबिम्बों की अर्घ्यावली

ओं ह्रीं अर्हं पश्चिम-दिशागताञ्जनगिरि-स्थिताकृत्रिम-जिनालये नीलवर्णदेह-शोभित-किन्नर-व्यन्तर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ओं ह्रीं अर्हं धवलवर्ण-देहशोभित-किम्पुरुषव्यन्तर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ओं ह्रीं अर्हं कृष्णवर्ण-देहशोभित-महोरगव्यन्तर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ओं ह्रीं अर्हं स्वर्णवर्ण-देहशोभित-गन्धर्वव्यन्तर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ओं ह्रीं अर्हं स्वर्णवर्ण-देहशोभित-यक्षव्यन्तर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ओं ह्रीं अर्हं स्वर्णवर्ण-देहशोभित-राक्षस-व्यन्तर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ओं ह्रीं अर्हं कृष्णवर्ण-देहशोभित-भूत-व्यन्तर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ओं ह्रीं अर्हं पंकवर्ण देहशोभित-पिशाच-व्यन्तर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ओं ह्रीं अर्हं किन्नरेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

ओं ह्रीं अर्हं किम्पुरुषेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

ओं ह्रीं अर्हं हृदयंगमप्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

ओं ह्रीं अर्हं स्वरुपप्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

ओं ह्रीं अर्हं पालककिन्नर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

ओं ह्रीं अर्हं किन्नरकिन्नर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

ओं ह्रीं अर्हं किन्नरनिन्द्य-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

ओं ह्रीं अर्हं किन्नरमान्य-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

ओं ह्रीं अर्हं किन्नररम्य-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

ओं ह्रीं अर्हं किन्नरोत्तम-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

ओं ह्रीं अर्हं सत्पुरुषेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

ओं ह्रीं अर्हं महापुरुषेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

ओं ह्रीं अर्हं पुरुष-प्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

ओं ह्रीं अर्हं पुरुषोत्तम-प्रतीन्द-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

ओं ह्रीं अर्हं पुरुषप्रभ-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

ओं ह्रीं अर्हं अतिपुरुष-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

ओं ह्रीं अर्हं मरुत्-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥25॥

ओं ह्रीं अर्हं मरुत्देव-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥26॥

ओं ह्रीं अर्हं मरुत्प्रभ-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥27॥

ओं ह्रीं अर्हं अतिकायेन्द्रमहोरग-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥29॥

ओं ह्रीं अर्हं महाकायेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥30॥

ओं ह्रीं अर्हं भुजगप्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥31॥

ओं ह्रीं अर्हं भुजगशाल्य-प्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥32॥

ओं ह्रीं अर्हं स्कन्धशाल्य-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥33॥

ओं ह्रीं अर्हं मनोहर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥34॥

ओं ह्रीं अर्हं अशनि-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥35॥

ओं ह्रीं अर्हं महासुर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥36॥

ओं ह्रीं अर्हं गम्भीर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥37॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रियदर्शी-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥38॥

ओं ह्रीं अर्हं गीतरतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥39॥

ओं ह्रीं अर्हं गीतकीर्तीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥40॥

ओं ह्रीं अर्हं हाहाप्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥41॥

ओं ह्रीं अर्हं हूहूप्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥42॥

ओं ह्रीं अर्हं नारद-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥43॥

ओं ह्रीं अर्हं तुम्बुर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥44॥

ओं ह्रीं अर्हं कन्दर्प-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥45॥

ओं ह्रीं अर्हं वासव-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥46॥

ओं ह्रीं अर्हं महास्वर-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥47॥

ओं ह्रीं अर्हं धैवत-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥48॥
ओं ह्रीं अर्हं मणिभद्रेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥49॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्णभद्रेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥50॥
ओं ह्रीं अर्हं शैलभद्र-प्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥51॥
ओं ह्रीं अर्हं मनोभद्र-प्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥52॥
ओं ह्रीं अर्हं भद्रक-प्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥53॥
ओं ह्रीं अर्हं सुभद्रक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥54॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वभद्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥55॥
ओं ह्रीं अर्हं मनुष्य-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥56॥
ओं ह्रीं अर्हं धनपाल-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥57॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वरूपक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥58॥
ओं ह्रीं अर्हं यक्षोत्तम-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥59॥
ओं ह्रीं अर्हं मनोहरी-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥60॥
ओं ह्रीं अर्हं भीमेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥61॥
ओं ह्रीं अर्हं महाभीमेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥62॥
ओं ह्रीं अर्हं विघ्नहारी-प्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥63॥
ओं ह्रीं अर्हं उदंक-प्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥64॥
ओं ह्रीं अर्हं राक्षसनाम-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥65॥
ओं ह्रीं अर्हं महाराक्षसनाम-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥66॥
ओं ह्रीं अर्हं ब्रह्मराक्षसनाम-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥67॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वरूपेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥68॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रतिरूपेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥69॥
ओं ह्रीं अर्हं भूतोत्तमप्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥70॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रतिभूतप्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥71॥
ओं ह्रीं अर्हं महाभूतनामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥72॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रच्छन्ननामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥73॥
ओं ह्रीं अर्हं आकाश-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥74॥
ओं ह्रीं अर्हं कालेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥75॥
ओं ह्रीं अर्हं महाकालेन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥76॥

ओं ह्रीं अर्हं कूष्माण्ड-प्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥77॥

ओं ह्रीं अर्हं राक्षस-प्रतीन्द्र-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥78॥

ओं ह्रीं अर्हं यक्षनामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥79॥

ओं ह्रीं अर्हं सम्मोहकनामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥80॥

ओं ह्रीं अर्हं तारकनामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥81॥

ओं ह्रीं अर्हं अशुचिनामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥82॥

ओं ह्रीं अर्हं शुचिनामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥83॥

ओं ह्रीं अर्हं सतालनामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥84॥

ओं ह्रीं अर्हं देहनामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥85॥

ओं ह्रीं अर्हं महादेह-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥86॥

ओं ह्रीं अर्हं पूर्णनामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥87॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रवचननामक-देवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥88॥

ओं ह्रीं अर्हं किन्नरेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥89॥

ओं ह्रीं अर्हं किम्पुरुषेन्द्रस्य शचीद्वय-पूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥90॥

ओं ह्रीं अर्हं सत्पुरुषेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥91॥

ओं ह्रीं अर्हं महापुरुषेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥92॥

ओं ह्रीं अर्हं अतिकायेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥93॥

ओं ह्रीं अर्हं महाकायेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥94॥

ओं ह्रीं अर्हं गीतरतीन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥95॥

ओं ह्रीं अर्हं गीतकीर्तीन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥96॥

ओं ह्रीं अर्हं मणिभद्रेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥97॥

ओं ह्रीं अर्हं पूर्णभद्रेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥98॥

ओं ह्रीं अर्हं भीमेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥99॥

ओं ह्रीं अर्हं महाभीमेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥100॥

ओं ह्रीं अर्हं स्वरूपेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥101॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रतिरूपेन्द्रस्य शचीद्वयपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥102॥

ओं ह्रीं अर्हं कालेन्द्रस्य महादेवीद्वय-पूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥103॥

ओं ह्रीं अर्हं महाकालेन्द्रस्य महादेवीद्वय-पूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥104॥

ओं ह्रीं अर्हं मध्यलोक-पृथ्वीस्थित-द्वीप-व्यन्तरपुरनिवासि-सकलदेवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥105॥

ओं ह्रीं अर्हं अधोलोक-खरपंकभागस्थित-भवननिवासि-सकलदेवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥106॥

ओं ह्रीं अर्हं पृथिवीतलोपरिभागस्थ-पर्वतकूट-वृक्षवासनिवासिसकलदेव-पूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥107॥

ओं ह्रीं अर्हं पुरभवनावासस्थित-सकलव्यन्तरदेवपूजित-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥108॥

पूर्णार्घ्य

पुर आवास भवन भेदों में, त्रयविधि व्यन्तर देव बसें
भवनवासि भी इन तीनों में, रहते रहते सुखद लसें।
असुर कुमारों का भवनों में, ही रहना होता सुख से
भाव सहित मैं भी पूजूँ प्रभु, मुक्ति मिले चिर भव दुख से ॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम-दिशागताञ्जनगिरि दधिमुख-स्थिताकृत्रिम जिनालये शताष्ट -जिनचैत्येभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

षष्ठ पूजा

तर्ज-यशोमति मैया से बोले......

(स्थापना)

पूजा हो नन्दीश्वर की मनुज जनम पाया
देवों से भी बढ़के भाव है बनाया ।
भूला हूँ मोह में क्यों पर्व क्यों भुलाया
भूल अपनी दूर करने पूजन रचाया ।।
मिटे भूल विभ्रम मेरा चरणों में आया
थापना करूँ आह्वानन मनुज जनम पाया ।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्य-समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्य-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिशागत-रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्य-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हाथों में निर्मल जल ले पूजन तू कर ले
जन्म मृत्यु नाशन हेतू जिन वर को भज ले ।
सबसे है उत्तम कर्म गणधर ने गाया
पूजा हो नन्दीश्वर की मनुज जनम पाया ।।1।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत-रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्य-समूहेभ्यो नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कपूर मिश्रित केसर मंगाई
जिन वर चरण पूजा मन को सुहाई ।
शीतल बने मन मेरा इसीलिए आया
पूजा हो नन्दीश्वर की मनुज जनम पाया ।।2।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत-रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनचैत्यसमूहेभ्यो नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आतमा अखण्डित है ज्ञान से भी मण्डित
जाने जो आतमा है वह ही है पण्डित ।
पण्डित बनूँ मैं जिनवर अक्षत चढ़ाया
पूजा हो नन्दीश्वर की मनुज जनम पाया ।।3।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत-रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्यसमूहेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रागी हो पुष्पों से कामना बढ़ाई
वीतराग चरणों की कभी सुध न आई ।
हाथ ले के पुष्पों को पूजा करने आया
पूजा हो नन्दीश्वर की मनुज जनम पाया ।।4।।

ओं ह्रीं अर्ह नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत-रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्यसमूहेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

महकते रसीले सब व्यंजन हैं खाए
तृष्णा की अग्नि में, हम जलते जाए ।
रोग ये क्षुधा का मेटो, प्रभू गीत गाया
पूजा हो नन्दीश्वर की मनुज जनम पाया ।।5।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत-रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्य-समूहेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैसे ये दीपक की लौ, निज पर प्रकाशी
चेतना भी वैसी, ज्ञान से प्रकाशी
मोह का तिमिर प्रभु, दूर भगता जाया
पूजा हो नन्दीश्वर की, मनुज जनम पाया ।।6।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत-रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्य-समूहेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जब जले अनल में, सौरभ महकती
अष्ट कर्म दहते त्योंही, चेतना चमकती ।
निज की अनुभूति हो, धूप पद चढ़ाया
पूजा हो नन्दीश्वर की, मनुज जनम पाया ॥7॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत रतिकरपर्वतस्थित जिनालयस्थ-जिनचैत्यसमूहेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अखरोट बादाम ऐला, नारियल सुपारी
उत्तम फलों को लेके आया पुजारी ।
तुच्छ भेंट ले लो जिनवर, भक्ती का भाया
पूजा हो नन्दीश्वर की मनुज जनम पाया ॥8॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत-रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्य-समूहेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पानीय चन्दन अक्षत, पुष्प को मिला के
नैवेद्य दीप धूप, फल संग ला के ।
अर्घ्य है बनाया प्रभुवर, जैसा भी आया
पूजा हो नन्दीश्वर की, मनुज जनम पाया ॥9॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशागत-रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-जिनचैत्यसमूहेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत में मात्र पंच परमेष्ठी ही पूज्यनीय संज्ञा को प्राप्त होते हैं, शेष आदरणीय हो सकते हैं।

पश्चिम-दिशागत- रतिकर गिरि- स्थित अकृत्रिम जिनबिम्बों की अर्घ्यावली

इन्द्रों ने थुति जो करी सहस नाम से पूर्व।
उन्हीं नाम से अब करूँ भक्ति जिनेश अपूर्व ।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम-दिशागत-रतिकर-पर्वत-स्थिताकृत्रिम जिनालये श्रीमते-जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

ओं ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

ओं ह्रीं अर्हं वृषभाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

ओं ह्रीं अर्हं शंभवाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

ओं ह्रीं अर्हं शंभवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

ओं ह्रीं अर्हं आत्मभुवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

ओं ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

ओं ह्रीं अर्हं प्रभवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

ओं ह्रीं अर्हं भोक्त्रे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वभुवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

ओं ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वात्मने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वलोकेशाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वतश्चक्षुषे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

ओं ह्रीं अर्हं अक्षराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वविदे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वयोनये जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

ओं ह्रीं अर्हं अनश्वराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

ओं ह्रीं अर्हं विभवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

ओं ह्रीं अर्हं धात्रे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वेशाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वलोचनाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

ओं ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

ओं ह्रीं अर्हं विधये जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥26॥
ओं ह्रीं अर्हं वेधसे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥27॥
ओं ह्रीं अर्हं शाश्वताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥28॥
ओं ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥29॥
ओं ह्रीं अर्हं विश्वकर्मणे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥30॥
ओं ह्रीं अर्हं जगज्ज्येष्ठाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥31॥
ओं ह्रीं अर्हं विश्वमूर्त्तये जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥32॥
ओं ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥33॥
ओं ह्रीं अर्हं विश्वदृशे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥34॥
ओं ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥35॥
ओं ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिषे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥36॥
ओं ह्रीं अर्हं अनीश्वराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥37॥
ओं ह्रीं अर्हं जिनाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥38॥
ओं ह्रीं अर्हं जिष्णवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥39॥
ओं ह्रीं अर्हं अमेयात्मने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥40॥
ओं ह्रीं अर्हं विश्वरीशाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥41॥
ओं ह्रीं अर्हं जगत्पतये जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥42॥
ओं ह्रीं अर्हं अनंतजिते जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥43॥
ओं ह्रीं अर्हं अचिंत्यात्मने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥44॥
ओं ह्रीं अर्हं भव्यबंधवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥45॥
ओं ह्रीं अर्हं अबंधने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥46॥
ओं ह्रीं अर्हं युगादिपुरुषाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥47॥
ओं ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥48॥
ओं ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥49॥
ओं ह्रीं अर्हं शिवाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥50॥
ओं ह्रीं अर्हं पराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥51॥
ओं ह्रीं अर्हं परतराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥52॥
ओं ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥53॥
ओं ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥54॥
ओं ह्रीं अर्हं सनातनाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥55॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वयंज्योतिषे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥56॥

ओं ह्रीं अर्हं अजाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥57॥
ओं ह्रीं अर्हं अजन्मने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥58॥
ओं ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥59॥
ओं ह्रीं अर्हं अयोनिजाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥60॥
ओं ह्रीं अर्हं मोहारिविजयिने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥61॥
ओं ह्रीं अर्हं जेत्रे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥62॥
ओं ह्रीं अर्हं धर्मचक्रिणे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥63॥
ओं ह्रीं अर्हं दयाध्वजाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥64॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रशान्तारये जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥65॥
ओं ह्रीं अर्हं अनंतात्मने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥66॥
ओं ह्रीं अर्हं योगिने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥67॥
ओं ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥68॥
ओं ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥69॥
ओं ह्रीं अर्हं ब्रह्मतत्वज्ञाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥70॥
ओं ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्यविदे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥71॥
ओं ह्रीं अर्हं यतीश्वराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥72॥
ओं ह्रीं अर्हं शुद्धाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥73॥
ओं ह्रीं अर्हं बुद्धाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥74॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्मने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥75॥
ओं ह्रीं अर्हं सिद्धार्थाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥76॥
ओं ह्रीं अर्हं सिद्धशासनाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥77॥
ओं ह्रीं अर्हं सिद्धाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥78॥
ओं ह्रीं अर्हं सिद्धांतविदे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥79॥
ओं ह्रीं अर्हं ध्येयाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥80॥
ओं ह्रीं अर्हं सिद्धसाध्याय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥81॥
ओं ह्रीं अर्हं जगद्धिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥82॥
ओं ह्रीं अर्हं सहिष्णवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥83॥
ओं ह्रीं अर्हं अच्युताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥84॥
ओं ह्रीं अर्हं अनंताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥85॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥86॥
ओं ह्रीं अर्हं भवोद्भवाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥87॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रभूष्णवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥88॥
ओं ह्रीं अर्हं अजराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥89॥
ओं ह्रीं अर्हं अजर्याय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥90॥
ओं ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥91॥
ओं ह्रीं अर्हं धीश्वराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥92॥
ओं ह्रीं अर्हं अव्ययाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥93॥
ओं ह्रीं अर्हं विभावसवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥94॥
ओं ह्रीं अर्हं असंभूष्णवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥95॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वयंभूष्णवे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥96॥
ओं ह्रीं अर्हं पुरातनाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥97॥
ओं ह्रीं अर्हं परमात्मने जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥98॥
ओं ह्रीं अर्हं परंज्योतिषे जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥99॥
ओं ह्रीं अर्हं त्रिजगत्परमेश्वराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥100॥
ओं ह्रीं अर्हं संकल्पपूरणाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥101॥
ओं ह्रीं अर्हं संबोधिप्रदाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥102॥
ओं ह्रीं अर्हं सम्बन्ध-रहिताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥103॥
ओं ह्रीं अर्हं असम्बद्धाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥104॥
ओं ह्रीं अर्हं अस्पृष्टाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥105॥
ओं ह्रीं अर्हं असंस्पर्शरूपाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥106॥
ओं ह्रीं अर्हं अबंधसिद्धाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥107॥
ओं ह्रीं अर्हं अमूर्तज्ञाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥108॥

पूर्णार्घ्य

श्री जिनवर के नाम हजारों बृहस्पति सुर भी गाते
गणधर मुनिवर ऋषिवर सुरवर और मनुजवर भी गाते।
मंगल रव की धूपगन्ध की सुर नटनी की नूपुर की
नित्य गूंज से गुंजित जिन को अर्घ राह है शिवपुर की॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिशागत-रतिकर-पर्वत-स्थिताकृत्रिम जिनालये शताष्टजिन चैत्येभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सप्तम पूजा

(स्थापना)

विघ्न टलें सब काम बनें, हो दूर दरिद्दर सौख्य पलें
सुत भ्रात सुबन्धु सहायक ही, पल-पल साता के सौख्य फलें।
बिन जतन निरोगी देह रहे, शिवपथ रत्नत्राय साथ चलें
अरि मित्र बने प्रभु पूजन से, थापूं आह्वानन अशुभ टलें ।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्नगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्यसमूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनचैत्यसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ओं ह्रीं अर्ह नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ- जिनचैत्यसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जलधारा से अग्नि शीतल, चाहे अग्नि के कुण्ड जलें
सीता सम शील स्वभाव बढ़े, पर कृत बाधायें दूर चलें ।
नन्दीश्वर की पूजा करते, अरु अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से बढ़कर, तीनों पर्वत जो पूज करें ।।1।।

ओं ह्रीं अर्ह नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन कुंकुम से, चक्रीय शीतलता पा न सके
जो शीतलता तब वचनों से, पाई उसको भी गा न सके ।
नन्दीश्वर की पूजा करते, अरु अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से बढ़कर, तीनों पर्वत जो पूज करें ।।2।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः संसार-ताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धवल-धवल अक्षत लेकर, श्रेणिक सा समोशरण जाता
अक्षय पद पाने हेतु वही, क्षायिक समकित भी पा जाता ।
नन्दीश्वर की पूजा करते अरु, अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से बढ़कर, तीनों पर्वत जो पूज करें ।।3।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मेंढक सा दंत पंखुड़ी ले, बिन आग्रह भक्ति भाव भरा
वह कामदेव का बाण नशा, फिर कामदेव सा बन उभरा ।
नन्दीश्वर की पूजा करते अरु अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से बढ़कर तीनों पर्वत जो पूज करें ।।4।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य समर्पित जिनपद में, ना वैद्य से उसको काम पड़े
नीरोग रहे भरतेश्वर सा, ना भ्रात से कोई भ्रात लड़े ।
नन्दीश्वर की पूजा करते अरु अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से चढ़कर तीनों पर्वत जो पूज करें ।।5।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः क्षुधारोग- विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव जीवन में ज्ञान बिना धन तृष्णा में जीवन बीते
इस ज्ञान दीप की बाती से, अन्तस के सघन तिमिर रीतें ।
नन्दीश्वर की पूजा करते अरु अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से बढ़कर तीनों पर्वत जो पूज करें ।।6।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं वीरप्रभु सा कर्म दहूँ, अठ कर्म का धूम उड़ाने को
सुरभित प्रासुक सद्गन्धन ले, जिनपद में जिनपद पाने को।
नन्दीश्वर की पूजा करते अरु अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से बढ़कर तीनों पर्वत जो पूज करें ।।7।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी फल सूखे प्रासुक हैं, उनमें जो कुछ भी सार भरा
उस सार से भी बढ़कर के यहाँ, श्री कुन्द-कुन्द श्रुत सार भरा।
नन्दीश्वर की पूजा करते अरु अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से बढ़कर तीनों पर्वत जो पूज करें ।।8।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पों को, चरुदीप धूप फल से मेलूं
अठ द्रव्यों का मैं अर्घ बना सिद्धों के आठ गुणों को लूँ।
नन्दीश्वर की पूजा करते अरु अष्टम द्वीप का ध्यान धरें
वे नर नारी सुर से बढ़कर तीनों पर्वत जो पूज करें ।।9।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर-दिशागत-अञ्जनगिरि एवं दधिमुख-स्थित अकृत्रिम जिनबिम्बों की अर्घ्यावली

जिनके गुण औ नाम का, कहत न पावें पार।
गणधरादि इन्द्रादि भी, ऐसे श्री जिन सार॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागतञ्जनगिरि दधिमुख-स्थिताकृत्रिम जिनालयस्थित-त्रिकालदर्शिने-जिनचैत्याय नमः ॥1॥
ओं ह्रीं अर्हं लोकेशाय जिनचैत्याय नमः ॥2॥
ओं ह्रीं अर्हं लोकधात्रे जिनचैत्याय नमः ॥3॥
ओं ह्रीं अर्हं दृढव्रताय जिनचैत्याय नमः ॥4॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वलोकातिगाय जिनचैत्याय नमः ॥5॥
ओं ह्रीं अर्हं पूज्याय जिनचैत्याय नमः ॥6॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वलोकैकसारथये जिनचैत्याय नमः ॥7॥
ओं ह्रीं अर्हं पुराणाय जिनचैत्याय नमः ॥8॥
ओं ह्रीं अर्हं पुरुषाय जिनचैत्याय नमः ॥9॥
ओं ह्रीं अर्हं पूर्वाय जिनचैत्याय नमः ॥10॥
ओं ह्रीं अर्हं कृतपूर्वांगविस्ताराय जिनचैत्याय नमः ॥11॥
ओं ह्रीं अर्हं आदिदेवाय जिनचैत्याय नमः ॥12॥
ओं ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय जिनचैत्याय नमः ॥13॥
ओं ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय जिनचैत्याय नमः ॥14॥
ओं ह्रीं अर्हं अधिदेवतायै जिनचैत्याय नमः ॥15॥
ओं ह्रीं अर्हं युगमुख्याय जिनचैत्याय नमः ॥16॥
ओं ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय जिनचैत्याय नमः ॥17॥
ओं ह्रीं अर्हं युगादि-स्थितिदेशकाय जिनचैत्याय नमः ॥18॥
ओं ह्रीं अर्हं कल्याणवर्णाय जिनचैत्याय नमः ॥19॥
ओं ह्रीं अर्हं कल्याणाय जिनचैत्याय नमः ॥20॥
ओं ह्रीं अर्हं कल्याय जिनचैत्याय नमः ॥21॥
ओं ह्रीं अर्हं कल्याणलक्षणाय जिनचैत्याय नमः ॥22॥
ओं ह्रीं अर्हं कल्याणप्रकृतये जिनचैत्याय नमः ॥23॥
ओं ह्रीं अर्हं दीप्तकल्याणात्मने जिनचैत्याय नमः ॥24॥

ओं ह्रीं अर्हं विकल्मषाय जिनचैत्याय नमः ॥25॥
ओं ह्रीं अर्हं विकलंकाय जिनचैत्याय नमः ॥26॥
ओं ह्रीं अर्हं कलातीताय जिनचैत्याय नमः ॥27॥
ओं ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय जिनचैत्याय नमः ॥28॥
ओं ह्रीं अर्हं कलाधराय जिनचैत्याय नमः ॥29॥
ओं ह्रीं अर्हं देवदेवाय जिनचैत्याय नमः ॥30॥
ओं ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय जिनचैत्याय नमः ॥31॥
ओं ह्रीं अर्हं जगद्-बंधवे जिनचैत्याय नमः ॥32॥
ओं ह्रीं अर्हं जगद्विभवे जिनचैत्याय नमः ॥33॥
ओं ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे जिनचैत्याय नमः ॥34॥
ओं ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय जिनचैत्याय नमः ॥35॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय जिनचैत्याय नमः ॥36॥
ओं ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय जिनचैत्याय नमः ॥37॥
ओं ह्रीं अर्हं चराचरगुरवे जिनचैत्याय नमः ॥38॥
ओं ह्रीं अर्हं गोप्याय जिनचैत्याय नमः ॥39॥
ओं ह्रीं अर्हं गूढ़ात्मने जिनचैत्याय नमः ॥40॥
ओं ह्रीं अर्हं गूढगोचराय जिनचैत्याय नमः ॥41॥
ओं ह्रीं अर्हं सद्योजाताय जिनचैत्याय नमः ॥42॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने जिनचैत्याय नमः ॥43॥
ओं ह्रीं अर्हं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय जिनचैत्याय नमः ॥44॥
ओं ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय जिनचैत्याय नमः ॥45॥
ओं ह्रीं अर्हं घर्माभाय जिनचैत्याय नमः ॥46॥
ओं ह्रीं अर्हं सुप्रभाय जिनचैत्याय नमः ॥47॥
ओं ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय जिनचैत्याय नमः ॥48॥
ओं ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय जिनचैत्याय नमः ॥49॥
ओं ह्रीं अर्हं रुक्माभाय जिनचैत्याय नमः ॥50॥
ओं ह्रीं अर्हं सूर्यकोटिसमप्रभाय जिनचैत्याय नमः ॥51॥
ओं ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय जिनचैत्याय नमः ॥52॥
ओं ह्रीं अर्हं तुंगाय जिनचैत्याय नमः ॥53॥
ओं ह्रीं अर्हं बालार्काभाय जिनचैत्याय नमः ॥54॥
ओं ह्रीं अर्हं अनलप्रभाय जिनचैत्याय नमः ॥55॥

ओं ह्रीं अर्हं संध्याभ्रबभ्रवे जिनचैत्याय नमः ॥56॥
ओं ह्रीं अर्हं हेमाभाय जिनचैत्याय नमः ॥57॥
ओं ह्रीं अर्हं तप्तचामीकरच्छवये जिनचैत्याय नमः ॥58॥
ओं ह्रीं अर्हं निष्टतप्तकनकच्छायाय जिनचैत्याय नमः ॥59॥
ओं ह्रीं अर्हं कनत्कांचनसन्निभाय जिनचैत्याय नमः ॥60॥
ओं ह्रीं अर्हं हिरण्यवर्णाय जिनचैत्याय नमः ॥61॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वर्णाभाय जिनचैत्याय नमः ॥62॥
ओं ह्रीं अर्हं शातकुंभनिभप्रभाय जिनचैत्याय नमः ॥63॥
ओं ह्रीं अर्हं द्युम्नाभाय जिनचैत्याय नमः ॥64॥
ओं ह्रीं अर्हं जातरूपाभाय जिनचैत्याय नमः ॥65॥
ओं ह्रीं अर्हं तप्तजांबूनदद्युतये जिनचैत्याय नमः ॥66॥
ओं ह्रीं अर्हं सुधौतकलधौतश्रिये जिनचैत्याय नमः ॥67॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रदीप्ताय जिनचैत्याय नमः ॥68॥
ओं ह्रीं अर्हं हाटकद्युतये जिनचैत्याय नमः ॥69॥
ओं ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय जिनचैत्याय नमः ॥70॥
ओं ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय जिनचैत्याय नमः ॥71॥
ओं ह्रीं अर्हं पुष्टाय जिनचैत्याय नमः ॥72॥
ओं ह्रीं अर्हं स्पष्टाय जिनचैत्याय नमः ॥73॥
ओं ह्रीं अर्हं स्पष्टाक्षराय जिनचैत्याय नमः ॥74॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षमाय जिनचैत्याय नमः ॥75॥
ओं ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय जिनचैत्याय नमः ॥76॥
ओं ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय जिनचैत्याय नमः ॥77॥
ओं ह्रीं अर्हं अमोघाय जिनचैत्याय नमः ॥78॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रशास्त्रे जिनचैत्याय नमः ॥79॥
ओं ह्रीं अर्हं शासित्रे जिनचैत्याय नमः ॥80॥
ओं ह्रीं अर्हं स्वभुवे जिनचैत्याय नमः ॥81॥
ओं ह्रीं अर्हं शांतिनिष्ठाय जिनचैत्याय नमः ॥82॥
ओं ह्रीं अर्हं मुनिज्येष्ठाय जिनचैत्याय नमः ॥83॥
ओं ह्रीं अर्हं शिवतातये जिनचैत्याय नमः ॥84॥
ओं ह्रीं अर्हं शिवप्रदाय जिनचैत्याय नमः ॥85॥
ओं ह्रीं अर्हं शांतिदाय जिनचैत्याय नमः ॥86॥

ओं ह्रीं अर्हं शांतिकृते जिनचैत्याय नमः ॥87॥
ओं ह्रीं अर्हं शांतये जिनचैत्याय नमः ॥88॥
ओं ह्रीं अर्हं कांतिमते जिनचैत्याय नमः ॥89॥
ओं ह्रीं अर्हं कामितप्रदाय जिनचैत्याय नमः ॥90॥
ओं ह्रीं अर्हं श्रेयोनिधये जिनचैत्याय नमः ॥91॥
ओं ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय जिनचैत्याय नमः ॥92॥
ओं ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठाय जिनचैत्याय नमः ॥93॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठताय जिनचैत्याय नमः ॥94॥
ओं ह्रीं अर्हं सुस्थिराय जिनचैत्याय नमः ॥95॥
ओं ह्रीं अर्हं स्थावराय जिनचैत्याय नमः ॥96॥
ओं ह्रीं अर्हं स्थास्नवे जिनचैत्याय नमः ॥97॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रथीयसे जिनचैत्याय नमः ॥98॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रथिताय जिनचैत्याय नमः ॥99॥
ओं ह्रीं अर्हं पृथवे जिनचैत्याय नमः ॥100॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वविज्ञानाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥101॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वशक्तियुताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥102॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वपदार्थस्पृष्टाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥103॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वगतज्ञानाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥104॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वाद्भुताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥105॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वलोकस्तुताय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥106॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्ववन्द्याय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥107॥
ओं ह्रीं अर्हं सर्वेष्टकराय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥108॥

पूर्णार्घ्य

हो त्रिकालदर्शी गूढात्मा सर्वपिता सर्वेश्वर हो
हे त्रिकाल अभिवन्द्य ! जिनेश्वर त्रैकालिक अखिलेश्वर हो।
काललब्धि मेरी अब आयी आप ज्ञान ले मम पर्याय
अर्घ चढ़ाकर अनर्घपद को पाने मेरा मन ललचाय॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जन दधिमुख-पर्वत-स्थिताकृत्रिम जिनालये शताष्ट जिनचैत्येभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अष्टम पूजा

(स्थापना)

अंजन दधिमुख रतिकरपर्वत नन्दीश्वर के द्वीपों में
अति मनहर उत्कृष्ट जिनालय लगते हैं सब द्वीपों में ।
जिनकी पूजा से भव नशता सम्यग्दर्शन ज्ञान बढ़े,
रतिकर अठ गिरि जिनालयों का थापन करना ध्यान बड़े ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तर दिशागताष्ट-रतिकरपर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्य समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकर-पर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्य समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकर-पर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्य समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

नीरधार तन निर्मल करती, स्वच्छ करे ज्यों अशुचि को
भक्तिधार त्यों शुद्ध बनाए, मेरे मन जिनवर रुचि को
इसी हेतु पद में अर्पित है, जलधारा नित त्रय बारा
जनम-मरण जरता नश जाए, भव भ्रमणा से निस्तारा ।।1 ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकरपर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

औदारिक तन पर शीतलता, चन्दन लेपन है करता
पूज्य गुणों की संस्तुति रंजित, मन शीतलता से भरता ।
इसी हेतु अर्पित करता हूँ, चन्दन मन की दाह मिटे
शीतल तन मन वचनों से फिर, कर्मबन्ध का भार मिटे ।।2।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकरपर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

वैसे तो ये धवल अखण्डित, अक्षत सुन्दर लगते हैं
पै आतम का ज्ञान हुआ तो, ज्ञायकपन में रमते हैं ।
इसी हेतु अर्पित करता हूँ, अक्षत तण्डुल पुंज बना
आत्मज्ञान की रुचि श्रद्धा से अक्षय अनुभव बने घना ।।3।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकरपर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के पुष्प मनोहर, मन में काम बढ़ाते हैं
दिव्यध्वनि के बुद्धि अगोचर, तत्त्व ज्ञान करवाते हैं ।
पुष्प पुंज को भावों से, श्री जिन पद में चढ़ा रहा
मदन विनाश मन को साधूँ, रहित चित्त हो पापों से ।।4।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकरपर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वादु सुगन्धित व्यंजन खाकर, क्षुधा तृषा बढ़ती पाई
आत्म पिपासा कभी बढ़ी ना, नहीं शान्ति मन में आई ।
इसी हेतु अर्पित करता हूँ, चार-चारु चरु चरणों में
क्षुधा तृषा से रहित सिद्ध पद, पाने आया शरणा में ।।5।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकरपर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय मन का ज्ञान मोह से, भ्रमित हुआ है निजपन से
केवलज्ञान ज्योति सी दिखती, दीपक को ही निजपन से ।
अतः समर्पित मृणमय दीपक, तव चरणों में भावों से
मोह विनाशी सम्यग्बोधि, बढ़ जाती है चावों से ।।6।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकरपर्वत-स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुगन्धमय धूप अनल में, क्षेपण करता हर्ष मिले
कर्म काष्ठ जब ध्यान अनल में, जलता जाए दर्प मिटे ।
अतः समर्पित धूप अनल में, तव पद आगे क्षेप रहा
मिथ्यामद कन्दर्प नशे सब इसी भाव का सेक रहा ।।7।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकरपर्वत स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारिकेल बादाम सुपारी, नाम मात्र से फल होते
साम्य भाव के शान्तिभाव के, फल जिनभक्ति से बोते ।
अतः समर्पित फल मेवायें, फल भावों का मुझे मिले
मुक्ति फल का भाव लिए हूँ जीवन मेरा मुझे मिले ।।8।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकरपर्वत स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पों से, नैवेद्यों से दीपों से
धूप सुगन्धित प्रासुक फल से, अष्ट द्रव्य को चावों से ।
प्रभो समर्पित आज कर रहा, फल अनर्घ्य की चाह लिए
जिनदर्शन से निजदर्शन हो, पूजा का यह भाव लिए ।।9।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताष्ट-रतिकरपर्वत स्थिताकृत्रिम-जिनालयस्थ-जिनचैत्येभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के कार्यों को करने से
थकान बढ़ती है,
पर धर्म ध्यान करने से
थकान मिटती है।

उत्तर-दिशागत-रतिगिरि-स्थित अकृत्रिम जिनबिम्बों की अर्घ्यावली

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागत-रतिकरपर्वत-स्थिताकृत्रिम जिनालये तत्त्व प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

ओं ह्रीं अर्हं संवरकारण-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥2॥

ओं ह्रीं अर्हं निर्जरा-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥3॥

ओं ह्रीं अर्हं गुप्ति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥4॥

ओं ह्रीं अर्हं समिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥5॥

ओं ह्रीं अर्हं दशधर्म-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥6॥

ओं ह्रीं अर्हं अनुप्रेक्षा-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥7॥

ओं ह्रीं अर्हं परीषह-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥8॥

ओं ह्रीं अर्हं परीषहसंज्ञा-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥9॥

ओं ह्रीं अर्हं चतुर्दशपरीषहाध्वान-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥10॥

ओं ह्रीं अर्हं जिने-परीषह-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥11॥

ओं ह्रीं अर्हं बादरकषाये परीषह-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥12॥

ओं ह्रीं अर्हं ज्ञानावरणजनित-परीषह-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥13॥

ओं ह्रीं अर्हं दृग्मोहान्तरायजनित-परीषह-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥14॥

ओं ह्रीं अर्हं चारित्रमोहजनित-परीषह-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥15॥

ओं ह्रीं अर्हं वेदनीयजनित-परीषह-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥16॥

ओं ह्रीं अर्हं युगपत्परीषह-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥17॥

ओं ह्रीं अर्हं पंचचारित्र-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥18॥

ओं ह्रीं अर्हं बाह्यतपः प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥19॥

ओं ह्रीं अर्हं अभ्यन्तरतपः प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥20॥

ओं ह्रीं अर्हं अभ्यन्तरतपोभेदसंख्या-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥21॥

ओं ह्रीं अर्हं प्रायश्चित्तभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥22॥

ओं ह्रीं अर्हं विनयभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥23॥

ओं ह्रीं अर्हं वैयावृत्त्यभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥24॥

ओं ह्रीं अर्हं स्वाध्यायभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥25॥

ओं ह्रीं अर्हं व्युत्सर्गभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥26॥

ओं ह्रीं अर्हं ध्यानलक्षण-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥27॥

ओं ह्रीं अर्हं चतुर्ध्यानभेद-लक्षण-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥28॥
ओं ह्रीं अर्हं मोक्षहेतुध्यान-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥29॥
ओं ह्रीं अर्हं आर्तध्यान-प्रथमभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥30॥
ओं ह्रीं अर्हं आर्तध्यान-द्वितीयभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥31॥
ओं ह्रीं अर्हं आर्तध्यान-तृतीयभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥32॥
ओं ह्रीं अर्हं आर्तध्यान-चतुर्थभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥33॥
ओं ह्रीं अर्हं आर्तध्यान-स्वामि-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥34॥
ओं ह्रीं अर्हं रौद्रध्यानस्वामि-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥35॥
ओं ह्रीं अर्हं धर्म्यध्यानभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥36॥
ओं ह्रीं अर्हं शुक्लध्यान-स्वामि-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥37॥
ओं ह्रीं अर्हं केवलिध्यान-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥38॥
ओं ह्रीं अर्हं शुक्लध्यान-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥39॥
ओं ह्रीं अर्हं ध्यानयोगभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥40॥
ओं ह्रीं अर्हं प्रथमशुक्लध्यानभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥41॥
ओं ह्रीं अर्हं द्वितीयशुक्लध्यानभेद-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥42॥
ओं ह्रीं अर्हं वितर्कलक्षण-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥43॥
ओं ह्रीं अर्हं वीचारलक्षण-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥44॥
ओं ह्रीं अर्हं असंख्येयगुण-निर्जराक्रम-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥45॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्ग्रन्थमुनि-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥46॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्ग्रन्थविकल्प-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥47॥
ओं ह्रीं अर्हं संवरनिर्जरा-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥48॥
ओं ह्रीं अर्हं संवरध्यान-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥49॥
ओं ह्रीं अर्हं सकलमुनिधर्म-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥50॥
ओं ह्रीं अर्हं केवलोत्पत्ति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥51॥
ओं ह्रीं अर्हं मोक्ष-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥52॥
ओं ह्रीं अर्हं मोक्षाभाव-भाव-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥53॥
ओं ह्रीं अर्हं मोक्षभाव-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥54॥
ओं ह्रीं अर्हं सिद्धगमन-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥55॥
ओं ह्रीं अर्हं लोकान्तगतिकरण-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥56॥
ओं ह्रीं अर्हं लोकान्तगति-दृष्टान्त-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥57॥
ओं ह्रीं अर्हं लोकान्तबहिर्गमनाभावकारण-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥58॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षेत्रादिविकल्पसाध्य-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥59॥
ओं ह्रीं अर्हं मोक्षतत्त्व-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥60॥

ओं ह्रीं अर्हं दशमाध्याय-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥61॥
ओं ह्रीं अर्हं तत्त्वज्ञानपुष्टोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥62॥
ओं ह्रीं अर्हं जीवतत्त्वज्ञोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥63॥
ओं ह्रीं अर्हं अजीवतत्त्व-भिन्नोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥64॥
ओं ह्रीं अर्हं आस्रवतत्त्व-रहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥65॥
ओं ह्रीं अर्हं बंधतत्त्व-रहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥66॥
ओं ह्रीं अर्हं संवरतत्त्व-सहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥67॥
ओं ह्रीं अर्हं निर्जरातत्त्व-सहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥68॥
ओं ह्रीं अर्हं मोक्षतत्त्व-सहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥69॥
ओं ह्रीं अर्हं मोक्षसाधक-परमेष्ठि-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥70॥
ओं ह्रीं अर्हं नित्यानन्दैक-तत्त्वस्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥71॥
ओं ह्रीं अर्हं सकलविमलज्ञान-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥72॥
ओं ह्रीं अर्हं चित्पिण्ड-स्वरुपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥73॥
ओं ह्रीं अर्हं चतुर्गतिसंसारदूरोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥74॥
ओं ह्रीं अर्हं निश्चयपञ्चाचार-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥75॥
ओं ह्रीं अर्हं भूतार्थ-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥76॥
ओं ह्रीं अर्हं सप्तभय-विमुक्तोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥77॥
ओं ह्रीं अर्हं सप्ततत्त्व-सहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥78॥
ओं ह्रीं अर्हं सप्तनय-रहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥79॥
ओं ह्रीं अर्हं सप्तविधिसंसार-रहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥80॥
ओं ह्रीं अर्हं सप्तभंग-सहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥81॥
ओं ह्रीं अर्हं अष्टगुणपुष्टोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥82॥
ओं ह्रीं अर्हं अष्टकर्म-कलंकरहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥83॥
ओं ह्रीं अर्हं नवकेवललब्धि-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥84॥
ओं ह्रीं अर्हं दशधर्म-सहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥85॥
ओं ह्रीं अर्हं द्वादशविधतपः स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥86॥
ओं ह्रीं अर्हं त्रयोदशविधचारित्र-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥87॥
ओं ह्रीं अर्हं चतुर्दशगुणस्थान-रहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥88॥
ओं ह्रीं अर्हं चतुर्दशजीव-समासरहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥89॥
ओं ह्रीं अर्हं पञ्चदशप्रमाद-रहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥90॥
ओं ह्रीं अर्हं षोडशभावना-सहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥91॥
ओं ह्रीं अर्हं सप्तदशासंयम-रहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥92॥
ओं ह्रीं अर्हं अष्टादशदोष-रहितोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥93॥

ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकज्ञान-स्वरूरपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥94॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकदर्शन-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥95॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकसुख-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥96॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकवीर्य-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥97॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकभोग-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥98॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकतृप्ति-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥99॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकलब्धि-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥100॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकानंतगुण-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥101॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकसम्यक्त्व-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥102॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकचारित्र-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥103॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकास्तित्व-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥104॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकज्ञायक-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥105॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकानन्द-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥106॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकसिद्ध-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥107॥
ओं ह्रीं अर्हं क्षायिकलब्धि-स्वरूपोऽहमिति-प्ररूपकाय जिनचैत्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ॥108॥

पूर्णार्घ्य

श्री जिनवर की वंदन से, सप्त तत्त्व का श्रवण हुआ,
मैं क्या हूँ क्या उपादेय है, तथा हेय क्या ज्ञात हुआ।
जिनदर्शन ही जिनपूजन है, जिनगुण वर्णन अध्ययन है,
अर्घ समर्पित जिन बिम्बों को, निजगुण जिनसे सुमरण है॥

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशागताञ्जन रतिकरपर्वत-स्थिताकृत्रिमजिनालये शताष्ट जिनबिम्बेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

जयमाला

(दोहा)

श्री जिनेन्द्र महिमा महा, महाज्ञान की हेतु ।
श्रद्धा की जिनदेव की, भव तारक इक सेतु ॥1॥
नन्दीश्वर के द्वीप में, अष्टाह्निक मुख पर्व ।
देव मनाते भक्ति से, पूजें हम मिल सर्व ॥2॥

(ज्ञानोदय छन्द)

नन्दीश्वर है द्वीप आठवाँ, तीन भुवन में ख्यात रहा,
नन्दीश्वर सागर ने घेरा, महिमा अनुपम धार रहा ।
इक सौ त्रेसठ कोटि चौरासी, लख योजन विस्तार महा
द्वीप मण्डलाकार चहुँदिश, फैला जिनवर ज्ञान कहा ॥3॥
पूर्व दिशा में मध्य भाग में, अंजन गिरिवर पर्वत है,
इन्द्रनील मणिमय अति सोहे, नील कांति का आकर है ।
सहस चौरासी योजन ऊँचा, इतना ही विस्तृत सब ओर,
एक सहस योजन गहरा है, गोल-गोल है चारों ओर ॥4॥
अंजन गिरि की चार दिशाएँ, चार द्रहों से शोभित हैं,
एक लाख योजन विस्तृत वे, चतुष्कोण मन मोहित हैं ।
कमल-कुवलयों-कुमुदवनों से, अति सुगन्ध नित फैल रही,
एक सहस योजन गहराई, जिसमें जलचर जीव नहीं ॥5॥
नन्दा नन्दवती वापी हैं, नन्दोत्तरा नन्दिघोषा,
पूर्वादिक दिशि में ये संस्थित वनखण्डों ने भी पोषा ।
वन अशोक सप्तच्छद चम्पक, आम्रवनों से चार दिशा,
चैत्य वृक्ष भी शोभित इनमें, अहो अहो अति मन हर्षा ॥6॥
इन वापी में मध्य भाग में, दधि सम उत्तम धवल महा
दस हजार योजन वह ऊँचा, दधिमुख पर्वत शोभ रहा ।
इतना ही विस्तार लिए है, एक सहस योजन गहरा,
गोल-गोल चहुँ ओर अनोखा तट पर वन वेदी पहरा ॥7॥

वापी के दो बाह्य कोंण में, रतिकर दो पर्वत सोहें,
एक सहस योजन ऊँचे वे, इतने ही विस्तृत वो हैं ।
योजन ढाई सौ अवगाहें, कनक कांतिमय आभा है,
चउ वापी के अठ रतिकर में, पूर्वदिशा गत शोभा है ॥8 ॥
इस विध इक अंजन गिरि घेरे, चउदधिमुख अठ रतिकर हैं,
जिनके शिखरों पर रत्नों के, इक इक जिनवर मन्दिर हैं ।
चार गोपुरों से शोभित हैं, मणि निर्मित सब कोट रहे,
प्रति जिनभवनों को घेरे ये, अनुपम शोभा धार रहे ॥9॥
मानस्तम्भ बने प्रति वीथी एक-एक नव-नव स्तूप,
वीथी पहले अंतराल वन, फिर ध्वजभूमि चैत्य स्वरूप ।
एक शताष्ट गर्भगृह शोभें, तथा स्वर्णमय मण्डप एक,
प्रतिमण्डप में रत्नमयी फिर, स्तम्भों से युत भू देख ॥10॥
गर्भगृहों के मध्य सुशोभित, सिंहासन आदिक के साथ,
नीले केश वज्रमयदन्त, लक्षणभृत पगतल अरु हाथ ।
मूंगा सारिख लाल ओंठ से, मानो बोल रहे भगवान,
धनुष पाँच सौ सभी विराजे, कनक रत्नमय सब श्रीमान ॥11 ॥
नागकुमार देव बत्तीस, इतने ही हैं यक्ष युगल,
जिन प्रतिमा पर चमर ढोरते, एक पंक्तिमय अलग-अलग ।
झारी कलशा दर्पण पंखा, ध्वज ठोना अरु छत्र चमर,
मंगल द्रव्य सभी इक इक हैं, एक शताष्ट वेदिका पर ॥12॥
जल चन्दन तंदुल कुसुमों में, वर चरु दीप धूप फल ले,
अर्घ बनाकर विविध विविध सुर, हर्षाते संस्तुति करते ।
ज्योतिर्व्यन्तर भवनवासिनी, कल्पवासिनी देवी भी,
भक्ति भाव से नृत्य गान में, रमती रहती खोई सी ॥13॥
भेरी घण्टा दिव्य नगाड़े, वाद्य बजाते उत्तम देव,
रात दिवस का भेद नहीं कुछ, जिनवर की महिमा का टेव ।

इसी तरह से दक्षिण अंजन-गिरि की चार वापिकाएँ,
अरजा, विरजा तथा अशोका, नाम वीतशोका गाएँ ।।14।।
पश्चिम अंजन गिरि के चहुँ दिश, विजया और वैजयन्ती,
तथा जयन्ती तीजी चौथी, अपराजिता नामवन्ती ।
उत्तर अंजनगिरि के चहुँ दिश, रम्या रमणीया भाती,
नाम सुप्रभा सर्वतोभद्रा ध्वजा वनों में लहराती ।।15 ।।
चार दिशा के चौंसठ वन में, एक-एक प्रासाद महा,
विविध भेद युत व्यन्तर देवों, परिवारों से विलस रहा ।
मास अषाढ़ और कार्तिक में, फाल्गुन में भी सुर हर साल,
इसी द्वीप में आकर रहते, उत्सव करते बहुत विशाल ।।16 ।।
नानाविध वाहन पर चढ़कर, फूल माल फल हाथ लिए,
चार निकाय स्वर्ग सोलह के, देव सभी वाचाल हुए ।
पूर्व दिशा में कल्पवासि सुर, दक्षिण में भावनसुर वे,
व्यन्तर पश्चिम दिशि में ठाड़े, ज्योतिसुर उत्तर दिशि में ।।17।।
पूर्वाह्निक अपराण्ह समय में, पूर्व रात पश्चिम रात्री,
छह-छह घण्टे क्रमशः पूजें करें प्रदक्षिण सब साथी ।
पूजा रचकर आठ दिनों तक, पंच मेरु सब सुर जाते,
मन वच तन की चेष्टाओं से भर-भर पुण्य सभी लाते ।।18 ।।

(दोहा)

नन्दीश्वर वर भक्ति को, जो जन पढ़े त्रिकाल ।
केवलज्ञानी होय के होते, सिद्ध निहाल ।।19।।
वीर प्रभु निर्वाण की, पच्चीस सौ च्वालीस ।
कार्तिक अष्टाह्निक लिखी, भक्ति महा जिनईश ।। 20 ।।

ओं ह्रीं अर्हं नन्दीश्वरद्वीपे-अञ्जनगिरि-दधिमुखगिरि-रतिकरगिरि-स्थिताकृत्रिम -जिनालये सर्व-जिनबिम्बेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

जाप मंत्र :

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनन्दीश्वरद्वीपस्थ - जिनबिम्बेभ्यो नमः ।।

आरती

नन्दीश्वर की पूजा रचायें, आठदिनों तक चाव से
भक्ति करके आरति गायें, ठाट बाट से भाव से
नन्दीश्वर की पूजा रचायें.......

पर्व अनादि से आया यह, नन्दीश्वर शुभ द्वीप का
सुरगण सुरपति पूजन करते, हर्षित हो बहु प्रीति ला
आओ हम सब नाचें गायें, उत्सव करें उपाव से
नन्दीश्वर की पूजा रचायें.......

अंजन दधिमुख रतिकर पर्वत, एक-एक दिश में शोभें
जिनवर के बावन जिन आलय, सुमरण से ही मन मोहें
द्वीप आठवां आठ दिनों तक, महिमा अद्भुत गाय ले
नन्दीश्वर की पूजा रचायें.......

राग छोड़ कर सभी आठ दिन, देव द्वीप में आते हैं
हम नर नारी भी मिल करके, जिनमन्दिर में आते हैं
महा भाग्य से जिनबिम्बों का, अर्घ चढ़ा सद्भाव से
नन्दीश्वर की पूजा रचायें.......

तीनों अष्टाह्निक में नियमित, चार निकायों के सब देव
अष्ट द्रव्य से पूज रचाके, करते श्री जिनवर की सेव
जीव अनंतो पार लगे हैं, जिन भक्ति की नाव से
नन्दीश्वर की पूजा रचायें.......

अठाई रासा

विनयकीर्ति द्वारा रचित अठाई रासा में अष्टाह्निका पर्व की महत्ता को पौराणिक कथा के आधार पर प्रस्तुत किया है जिस में 34 छन्द हैं।

प्राणी वरत अठाई जे करें ते पावें भवपार ॥ टेक ॥

अर्थ- अष्टाह्निका पर्व का व्रत जो करते हैं, वे संसार से पार होकर मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं।

जम्बूद्वीप सुहावणो लख योजन विस्तार।
भरतक्षेत्र दक्षिण दिशा पोदनपुर तहँ सार ॥ 1॥ प्राणी ॥
विद्यापति विद्याधरी सोमा राणी राय।
समकित पालै मन बचै धर्म सुनैं अधिकाय ॥2॥ प्राणी ॥

अर्थ- सभी द्वीपों के बीचों-बीच एक लाख योजन विस्तार वाला जम्बूद्वीप है, जो अति ही सुन्दर व मनोज्ञ है। जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र की दक्षिण दिशा में पोदनपुर राज्य है, उस नगर के राजा विद्यापति एवं उनकी धर्मपरायण सोमा नाम की रानी थी।

चारणमुनि तहाँ पारणे आये राजा गेह।
सोमाराणी आहार दे, पुण्य बढ़ो अति नेह ॥ 3 ॥ प्राणी ॥

अर्थ- राजा के घर पर परम तपस्वी चारण ऋद्धिधारी मुनि महाराज पारणा हेतु आए, उनका पड़गाहन हुआ, सोमारानी ने अति हर्षभाव से आहार दिये, जिस से पुण्य में अतिशय वृद्धि हुई।

ताहि समय नभ देवता चाले जात विमान।
जय जय शब्द भयो घनो मुनिवर पूछ्यो ज्ञान ॥4॥ प्राणी ॥

अर्थ- उसी समय आकाश में विमान से देवगण जा रहे थे, उन के द्वारा जय-जयकार के बार-बार शब्द उच्चारित हो रहे थे, तब रानी ने उन मुनिराज से इसका कारण जानना चाहा।

मुनिवर बोले रानि सुन नन्दीश्वर को जात।
जे नर करहिं स्वभावसों ते पावें शिवकांत।। 5 ।। प्राणी ।।

अर्थ- मुनिवर ने रानी से कहा कि रानी ये देवगण अठाई पर्व में नंदीश्वर दीप जा रहे हैं। महारानी जो प्राणी भक्तिभाव से नंदीश्वर द्वीप में भक्तिपूर्वक पूजन अर्चन करते हैं, वे मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त कर लेते हैं।

ऐसो बच रानी सुनो मन में भयो अनन्द।
नन्दीश्वर पूजा करें ध्यावें आदि जिनेन्द्र।। 6 ।। प्राणी ।।

अर्थ- मुनिराज के इन वचनों को सुनकर रानी अति प्रसन्न हुई और रानी ने संकल्प किया कि मैं भी नंदीश्वर द्वीप पूजन कर व्रत को अंगीकार करूँगी।

कातिक फागुण साढ़ में पालें मन वच काय।
आठ दिवस पूजा करें तीन भवांतर थाय।। 7 ।। प्राणी ।।

अर्थ- कार्तिक, फाल्गुन एवं अषाढ़ माह के अष्टाह्निका पर्व में मन-वचन-काय से 8 दिन तक जो प्राणी पूजन-भक्ति करता है, वह तीन भव पश्चात् मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है।

विद्यापति सुन चालियो रच्यो विमान अनूप।
रानी बरजै राय कों तुम हो मानुष भूप ।।8 ।। प्राणी ।।

अर्थ- मुनिराज के मुखारविन्द से राजा विद्यापति ने नंदीश्वर की महिमा सुनकर नंदीश्वर द्वीप जाने के लिए एक अद्भुत विमान तैयार किया, तब रानी ने राजा से कहा कि नंदीश्वर द्वीप मनुष्य नहीं जा सकते हैं।

मानुषोत्र लंघव नहीं मानुष जेती जात।
जिनवाणी निश्चय कही तीन भुवन विख्यात ।।9।। प्राणी ।।

अर्थ- रानी ने राजा से कहा कि मानुषोत्तर पर्वत के उस पार मनुष्य का गमन सम्भव नहीं है, ऐसा आगम में कहा गया है, यह बात तीनों लोकों में प्रसिद्ध है।

सो विद्यापति ना रहो चलो नन्दीश्वर द्वीप।
मानुषोत्र गिरसों मिलो जाय विमान महीप ।।10 ।। प्राणी ।।

अर्थ- फिर भी राजा विद्यापति ने रानी की बात न मानकर नंदीश्वर द्वीप के लिए प्रस्थान कर लिया और मानुषोत्तर पर्वत पर पहुँच गया और अभिमान बस आगे बढ़ा।

मानुषोत्र की भेंट तें परो धरनि खिर भार।
विद्यापति भव चूरियो देव भयो सुरसार ।। 11 ।। प्राणी ।।

अर्थ- मानुषोत्तर पर्वत से सिर टकराकर भूमि पर गिर पड़ा और मृत्यु को प्राप्त हुआ, दर्शन के भाव से स्वर्ग में देव हुआ है।

द्वीप नन्दीश्वर छिनक में पूजा वसु विध ठान।
करी सुमन-वच-काय से माल लई कर मान ।। 12 ।। प्राणी ।।

अर्थ- देवगति से तत्काल वह राजा का जीव अवधिज्ञान से सब कुछ जानकर नंदीश्वर द्वीप पहुँच गया और वहाँ अष्ट द्रव्य से मन, वचन, काय से पूजा की एवं वहाँ की माला प्राप्त की।

आनन्द सों घर आइयो नन्दीश्वर कर जात।
विद्यापति को रूप धर रानी सों कहै बात ।।13।। प्राणी ।।

अर्थ- विद्यापति राजा का जीव नंदीश्वर से लौटकर पुनः विद्यापति का रूप बनाकर पोदनपुर में आया और रानी सोमा से कहता है कि मैं नंदीश्वर की वंदना करके वापस आ गया हूँ।

रानी बोली सुन राजा यह तो कबहुँ न होय।
जिनवाणी मिथ्या नहीं निश्चय मन में सोय ।।14।। प्राणी ।।

अर्थ- रानी राजा से कहती है कि ऐसा हो ही नहीं सकता, कारण कि जिनवाणी यही कहती है कि मनुष्य नंदीश्वर जा ही नहीं सकता है, वह ढाईद्वीप से आगे नहीं जा सकता है जिनवाणी कभी भी मिथ्या नहीं हो सकती, निश्चय यही है

नन्दीश्वर की माल ले राय दिखाई आय।
अब तू साँचों जान मोहि पूजन कर बहु भाय ।।15 ।। प्राणी ।।

अर्थ- तब राजा ने नंदीश्वर की जयमाला रानी को दिखाई अब तो रानी तुझे सच्चा मानना पड़ेगा, मैंने नंदीश्वर का प्रमाण तुझे दिखा दिया, तुम सच मानो मैंने नंदीश्वर की भक्ति-भाव से पूजा की है।

रानी फिर तासों कहै नर भव परसे नाहिं।
पश्चिम सूरज उदय हुए जिनवाणी शुचि ताहिं ।।16।। प्राणी ।।

अर्थ-रानी ने पुनः राजा से कहा इस मनुष्य भव से तो सम्भव है ही नहीं, सूर्य भले पश्चिम से उदय होने लगे किन्तु यह सच नहीं हो सकता, क्योंकि जिनवाणी मिथ्या नहीं हो सकती।

रानी सों नृप फिर कही बावन भवन जिनाल।
तेरह-तेरह मैं वन्दे पूजन करि तत्काल ।।17।। प्राणी ।।

अर्थ - रानी से राजा पुनः कहता है कि मैंने वहाँ बावन जिनालयों की वंदना की है वहीं जाकर एक-एक दिशा में तेरह- तेरह जिनालयों की पूजन-वंदना की है।

जयमाला तहँ मो मिली आयो हूँ तुझ पास।
अब तू मिथ्या मान मत कर मेरा विश्वास ।।18।। प्राणी ।।

अर्थ- राजा कहता है कि रानी मुझे यह जयमाला वहीं से प्राप्त हुई है, जिसे लेकर तुम्हारे पास आया हूँ, तू मिथ्या न मान मैंने जरूर पूजा की है।

पूरब दक्षिण में वन्दे पश्चिम उत्तर जान।
मैं मिथ्या नहिं भाष हूँ श्री जिनवरकी आन ।। 19 ।। प्राणी ।।

अर्थ- मैंने पूर्व दक्षिण की वंदना की, पश्चिम उत्तर के जिनालयों की भी वंदना की है मैं कभी मिथ्या भाषण नहीं कह रहा हूँ, जिनवर मेरे बीच हैं मैं मिथ्या वचन नहीं कर रहा हूँ।

हे रानी तैं सच कही जिन वानी शुभ सार।
ढाई द्वीप न लांघई मानुष भव विस्तार ।।20।। प्राणी ।।

अर्थ- राजा से सब सुनकर रानी कहती है जिनवाणी ही सारभूत है, ढाईद्वीप को लाँघकर मनुष्य का गमन हो ही नहीं सकता है, यह निश्चय है, मुझे जिनवाणी पर सच्ची श्रद्धा है।

विद्यापति तें सुर भयो रूप धरो शुभ सोय।
रानी की स्तुति करी निश्चय समकित तोय ।।21।। प्राणी ।।

अर्थ- तब देव राजा का जो रूप धारण किये था, वह अपने असली रूप में आकर रानी की स्तुति करता और देव कहता है- रानी तुम धन्य हो, तुम्हारी श्रद्धा धन्य है, तुम सच्ची सम्यग्दृष्टि हो।

देव कहै अब रानि सुन, मानुषोत्र मिलो जाय।
तहँतें चय मैं सुर भयो, पूजे नन्दीश्वर पाय ।। 22 ।। प्राणी ।।

अर्थ- देव कहता है, रानी अब यथार्थता सुनो, मैं मानुषोत्तर पर्वत पर अवश्य गया था और वहाँ जाने के प्रयास में मेरा सिर टकराया मैं मरकर देव हुआ और देव पर्याय में तत्काल नंदीश्वर द्वीप हो आया

एक भवांतर मो रह्यो, जिन शासन परमान।

मिथ्याती मानें नहीं, श्रावक निश्चय आन ।।23।। प्राणी ।।

अर्थ- हे रानी जैनशासन के अनुसार अब मेरा एक भव ही बचा है क्योंकि मुनिराज ने तीन भव में नंदीश्वर द्वीप की वंदना करने से मोक्ष जाने का वचन कहा था किन्तु मिथ्यादृष्टि का श्रद्धान मजबूत नहीं होता है, अब मुझे पक्का विश्वास हो गया है।

सुर चय नर हथनापुरी, राज कियो भरपूर।

परिग्रह तजि संयम लियो, कर्म महागिर चूर ।।24।। प्राणी ।।

अर्थ- स्वर्ग से चयकर हस्तिनापुर नगर में जन्म लेकर भरपूर राज्य किया और समस्त परिग्रह का त्याग कर संयम लेकर श्रमण पद धारण किया और कर्म रूपी शिखर को चकनाचूर किया।

केवल ज्ञान उपाय कर मोक्ष गये मुनि-राय।

शाश्वत सुख विलसे जहाँ जामन मरन मिटाय ।।25।। प्राणी ।।

अर्थ- कठोर तपकर मुनिराज ने कैवल्य की प्राप्ति की और शेष अघातिया कर्मों को नाशकर मोक्ष प्राप्त किया एवं शाश्वत सुख में लीन होकर संसार के जन्म-मरण से हमेशा के लिए मुक्त हो गए अर्थात् राजा की पर्याय में तीसरे भव से ही मोक्ष प्राप्त कर लिया, मुनि के वचन सत्य सिद्ध हुए।

अब रानी की सुन कथा, संयम लीनो सार।

तपकर चयकर सुर भयो, विलसे सुख विस्तार ।।26।। प्राणी ।।

अर्थ- अब रानी का प्रसंग कहते हैं रानी सम्यग्दृष्टि तो थी उन ने संयम लेकर आर्यिका दीक्षा ली और तप करके स्वर्ग में जाकर अपार सुख को भोगने वाली देव पर्याय को प्राप्त कर स्त्रीलिंग का छेद किया।

गजपुर नगरी अवतरो, राज करै बहुभाय।
सोलहकारण भाइयो, धर्म सुनो अधिकाय ।।27।। प्राणी ।।

अर्थ- वह देव भी रानी का जीव स्वर्ग से चयकर हस्तिनापुर नगर में जन्म लेकर बहुत समय तक राज्य किया एवं सोलह कारण भावनाओं का चिन्तन करके धर्म ध्यानमय जीवन व्यतीत किया।

मुनि संघाटक आइयो, माली सार जनाय।
राजा बन्दों भाव सों, पुण्य बढ़ो अधिकाय ।।28।। प्राणी ।।

अर्थ- हस्तिनापुर नगर में संधारक नाम के श्री मुनि पधारे यह सूचना माली द्वारा राजा को बताई गई। राजा ने भावपूर्वक उन मुनिराज की वन्दना पूजा की और राजा ने अक्षय पुण्य का अर्जन किया।

राजा मन वैरागियो, संयम लीनो सार।
आठ सहस नृप साथ ले, यह संसार असार ।।29।। प्राणी ।।

अर्थ- मुनिराज के दर्शन करके राजा को भी वैराग्य उत्पन्न हुआ और आठ हजार राजाओं के साथ दिगम्बरी दीक्षा धारण की और यह संसार असार है ऐसा मन हुआ।

केवलज्ञान उपाय के, दोय सहस निर्वान।
दोय सहस सुख स्वर्ग के, भोगे भोग सुथान ।।30।। प्राणी ।।

अर्थ- उन राजा ने कठोर तप पूर्वक कैवल्य की प्राप्ति करके दो हजार वर्ष में निर्वाण प्राप्त किया। दो हजार वर्ष तक स्वर्ग सुखों का भोग कर व्यतीत किया।

चार सहस भूलोक में, हंडे बहु संसार।
काल पाय शिवपुर गये, उत्तम धर्म विचार ।।31।। प्राणी ।।

अर्थ- चार हजार वर्ष भू-लोक में रहे और संसार में परिभ्रमण किया एवं उत्तम धर्म का विचार सदैव जाकर समय से निर्वाण पद प्राप्त किया।

वरत अठाई जे करें, तीन जन्म परमान।
लोकालोक सु जान ही सिद्धारथ कुल कान ।।32।। प्राणी ।।

अर्थ- मुनिराज के वे वचन सिद्ध हुए अष्टाह्निक व्रत जो भक्तिभाव से करते हैं तीन भव में वे प्राणी मोक्ष को प्राप्त होते ही हैं एवं लोकालोक को जानने वाले केवली भगवान् हो सिद्ध पद को प्राप्त हो जाते हैं।

भव समुद्र के तरण को, बावन नौका जान।
जे जिय करें सुभाव सों, जिनवर सांच बखान ।।33।। प्राणी ।।

अर्थ- बावन जिनालयों की पूजा वास्तव में भवसागर से लड़ने के लिए बावन नौका के समान हैं। जो भव्यपुरुष स्वभाव से दृढ़तापूर्वक इस व्रत का पालन करते हैं। जिनेन्द्र भगवान् ने यह सत्य कहा है, वे निर्वाण पद को प्राप्त होते हैं।

मन वच काया तें पढ़ें ते पावें भव पार।
'विनयकीर्ति' सुखसों भजे, जन्म सुफल संसार ।।34।। प्राणी ।।

अर्थ- मन, वचन, काय की एकाग्रतापूर्वक जो व्रत को धारण करते हैं, वे संसार सागर से पार हो जाते हैं। 'विनयकीर्ति' कहते हैं कि उन का नरभव जन्म सफल हो जाता है। अठाई व्रत का जो पालन करते हैं, वे भव-वारिधि से पार हो जाते हैं अर्थात् मोक्ष सुख प्राप्त करते हैं।

।।समाप्त।।

नंदीश्वर विधान पाठ

श्री नंदीश्वर का पाठ करो दिन आठ ठाठ से भारी
फल पाओ महिमा न्यारी
यह पर्व अनादि जग में है
यह पर्व महा पर्वों में है
इस पर्व की महिमा गा न सके सुर सारी

फल पाओ....

कार्तिक अषाढ़ के महीने में
फाल्गुन के अन्त आठ दिन में
नंदीश्वर में जाती समाज सुर भारी

फल पाओ....

चारों निकाय के देव सभी
परिवार सहित आते सब ही
है द्वीप आठवाँ मध्य लोक सिंगारी

फल पाओ....

पन्द्रह जो कर्मभूमियाँ हैं
यो ढाई द्वीप में बढ़िया हैं
उन्हीं में पूज रचायें सब नर नारी

फल पाओ....

भक्ति से महामही पूजा
रचते विधान भव ना दूजा
सुख सम्पत्ति पा मुक्ति की आती बारी

फल पाओ...